

کرشن لیلا

فضل الحق کاشمیری

کرشن لیلا



۱۔ ٹائیٹل کِرشن لیلا

۲۔ صفحہ ۱۹۲

۳۔ عکس جنوری ۱۹۸۴ء

۴۔ کاتب مصنّف

۵۔ آرٹ تہ حاشیہ (")

۷۔ مول (شیٹھ روپیہ) Rs.60/-

۸۔ چھاپ خانہ :-

कृष्ण-लीला

پرنٹرز اینڈ پبلشرز :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگر۔ چھانپورہ۔ سرینگر

کشمیر ۱۹۰۰۱۵

شریمد بھگوت گیتا دنیا کی قدیم روحانی کتابوں میں بے نظیر اہمیت رکھتی ہے۔ اس کا

سورگیہ شریمتی مایاونتی بترا
کی سمرتی میں سمرپت۔
(مصنّف)

स्वर्गीया
श्रीमती मायावंती बतरा
की
पुण्य स्मृति में
समर्पित

फाज़िल कश्मीरो



● بنوُم پان ہورلی سوز بوٗرمَس
میٚنژلوٚ اوٗسس تہ اَنگ اَنگ ساز کوٗرمَس
ووٗزُس یس نِش چھیلتھ زھنہ مَس کدوٗرَت
تُلتھ زَنگارِ نوٗرُک آیہ پوٗرمَس

——— - ———

شریمد گیتا جی کِس قسم کے فوق البشر انسان (سپر مین Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے

۲/۵۶ جو سکھ سے سکھی ہو نہ دکھ سے دکھی۔ نہ خوف اُس کو آئے نہ غصہ کبھی۔ نہ جذبوں کے



नूरुक आयि

वनोवुम पान मोरली सोज़ बोरमस
मेच्युव ओसुस त अंग अग साज़ कोरमस
वोजुस यस निश छलिथ छ्'न्यमस कदूरथ
तुलिथ जंगार' नूरुक आयि पोरमस

नोट : नूरुक आयि :— (सूरऐ नूरुक आयि, सूरऐ नूर छु कुरानिमजीदुक अख सूरऐ शरीफ)

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
खमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

حرفِ اوّل

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب "کرشن لیلا" میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور/اللہ کی ہمہ گیر بخشش شاملِ حال رہی، جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزئین (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپروؔ اور پنڈت سائلؔ کاشمیری صاحب نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پربندھک سمتی سرینگر اور سناتن دھرم پرتاپ سبھا سرینگر نے مالی امداد دی۔ مَیں نے رسالۂ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے کافی فایدہ اُٹھایا ہیں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے اُن کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब " कृष्ण लीला " मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-–शान तामीर करने में मुझें ईश्वर - अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decoration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण–भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कौल "साइल–कश्मीरी" और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें "कल्याण" गोरखपुर का नायाब खसूसी "भागतङ्क", और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं ।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا ہے اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اوّلی سال اسلامیہ سکولوں میں گزارے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی کا نقشہ اتارا ہے۔ اس لئے میری کرشن لیلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ رگھوپتی سہائے فراق گورکھپوری کے کلام میں جابجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو ہندی بھاشا کی کرنیں جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا آئینہ دار ہے۔ دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلا پڑھ کر یاس کر یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती – मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबियत के दस अवायली साल इस्लामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अ'बी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जबान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर को झलकियां उभरती हैं। यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-ब-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है। दूसरी बात इस हकीकत को निशानदिही है कि "नात" कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ–-व-गुदाज से भो अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी "कृष्ण-लीला" पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बयानात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-

کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیّل کے ایک حلقہ سے نکل کر دُوسرے
حلقہ میں پڑنے میں کچھ تاُمل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسُولؐ
ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔
کیونکہ فاضل نے ستگورو سری بابا گورو نانک دیو جی پر بھی اپنی
کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مُسلمان ہونے کے
ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟....
کچھ بھی نہیں... ہاں! اتنا کہونگا کہ لوگ مجھے "شاعر" کہتے ہیں۔

یہاں چند عامیوں[1] کے سوال کا جواب دینے میں
مجھے تاُمل[2] نہیں کہ مَیں نے اپنی عُمر کے گرانقدر اور
مصروف ترین ۲۸ سال کرشن لیلا تصنیف اور
مُرتّب کرنے میں اِس لیئے صرف کیئے کہ سری گیتا جی کے
مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدّس[3] سلوک کا

نوٹ:-
۱۔ عامی:- ناخواندہ ۲۔ تاُمل = اندیشہ ۳۔ مُقدّس = پاک

यथुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमुल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जी पर भी अपनी कई तखलीकात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? .... कुछ भी नहीं......... हां। इतना कहूंगा कि लोग मुझे "शायिर" कहते हैं —

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमुल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-व-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ कियें कि श्री गीता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

مَیں قائِل ہوں ۔



ترجمہ :-

your right is to work only, but never to the fruit thereof. Let not the fruit of action be your object, nor let your attachment be to inaction.

تجھے کام کرنا ہے اور مردِ کار
نہیں اُس کے پھل پر تجھے اِختیار
کیئے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشا ہے کہ وسیع النظری سے
نوازے گئے قارئین اور سامعین میری "کرشن لیلا" سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات اُبھر آئیں گے۔

گُلشن نگر سرینگر 15
1-1-1984

فاضِل کاشمیری

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इख्तियार ।
किये जा अमल और न ढूंढ–इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी मे नवाजे गए कायरीन् और सामियीन मेरी "कृष्ण-लीला" से काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगें ॥

फ़ाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर–१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ए-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद. नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिख़मत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को झंकृत कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखरित

किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय–भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है। वही 'जय–जय हरि' कहने लगता है। उसका हृदय पाक-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता। फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन जल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मल को धो डालता है —

> कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
> छलान हेंद्यन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं। बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है। बांसुरी में फूंक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है। ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान की जासकती हैं। इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी तो एक ही समान हैं। कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है। उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है। जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाज़िल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण–काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

(निजामउद्दीन)

DR. NIZAM-UD-DIN
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

१२-१-१९८४

—·—

contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter of the Lord do not become influenced by the material qualities.

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā



"موورلی شبداہ اسہ گوکنن۔ وننچھ رادھاکرشنہ ہے آو"

TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not affected by the qualities of material nature, even though He is in

ترتیب

صفحہ

۱- پروفیسر نظام الدین ۲- ڈاکٹر جگت موستی ۳- علی محمد لنگر ۴- پروفیسر چمن لال سپرو
۵- شیو آچاریہ سوامی لکشمن جو گیت گنگا ۶- لالہ میلارام نجیون گوگجہ باغ۔



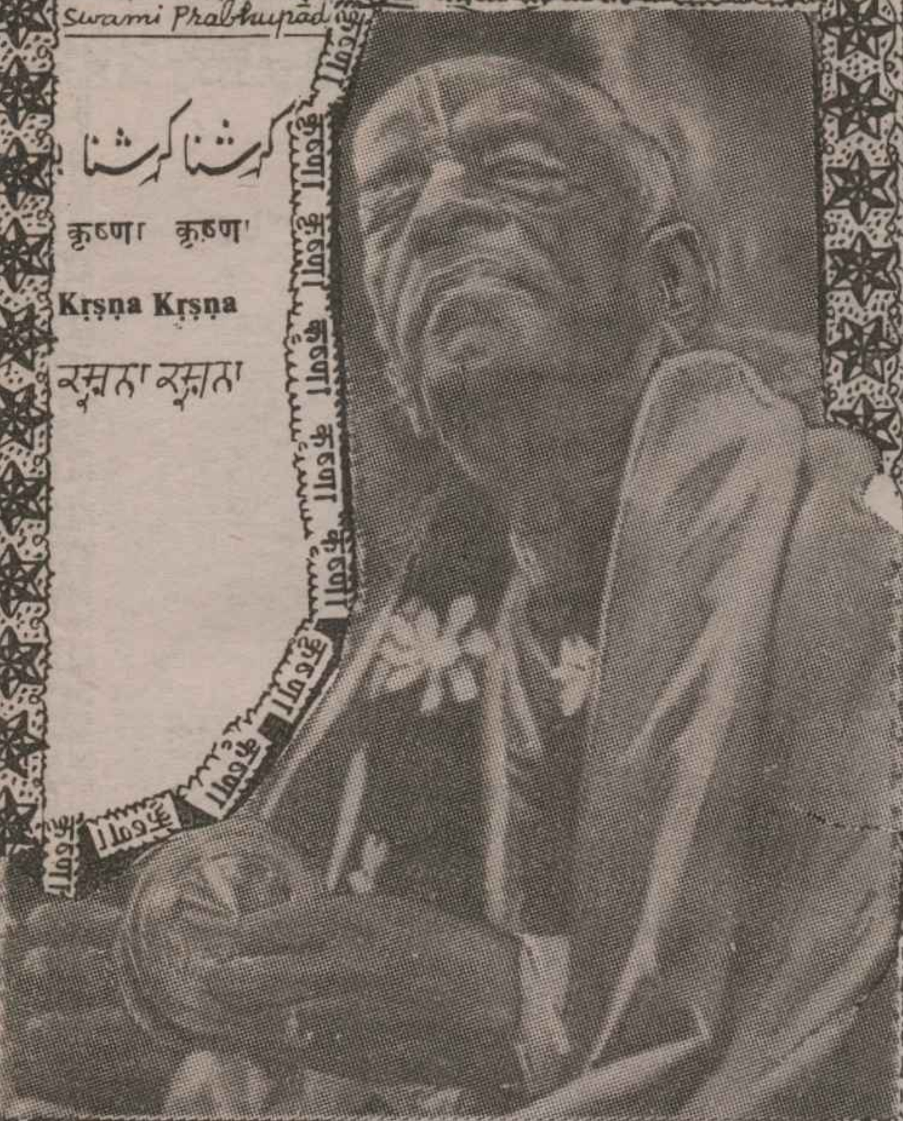
رادھایہ برٛی پیالہ۔ ژ گوپالہ مے کن وچھ۔ از کالہ یزم سالہ دماہ۔ لالہ مے کن وچھ
राधायि बरी प्याल' चे गूपाल' मे कुन वुछ
अज्ज काल यिज्यम साल' दमाह लाल' मे कुन वुछ
वृन्दावन कलानाथौ हृदयानन्द दायिनौ,
सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेऽहं कुंजगामिनौ ॥

اگر چھُے ژوُن سمر بھگوانہٕ سٕندۍ گوٗن
ژ یہٕ سپدی شوٗد پنُن دِل ہیرِ تے بوٗن
چھُ تمۍ سُند ناو سمرُن عین اکسیر
بناوان کیمیا گر چھُے کھوُٹس سوٗن

अगर छ़ुय ज़्वन सुम्यर भगवान् संध गोन
च़य सपदी शोंद पनुन दिल हेरि तय बोन
छ़ु तम्य सुंद नाव सुमरुन एन इकसीर
बनावान कीमियागर छ़ुय खोटिस स्वन

میہٕ نِش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو
کوٗرُن میانِس وونِدس منز پوٗرہٕ ٹھہراو
تمِس کُن اکھ قدم تُل یارِ لاگی
کرِی او رے دیا بھگوان ژٕ آزماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।
कोरुन म्यानिस वोन्दस मंज़ पूर ठेहराव ॥
तमिस कुन अख कदम तुल यार्य लागी ।
करिय ओरय दया भगवान च़ अज़माव ॥



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa *means 'all-attractive.' What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"*

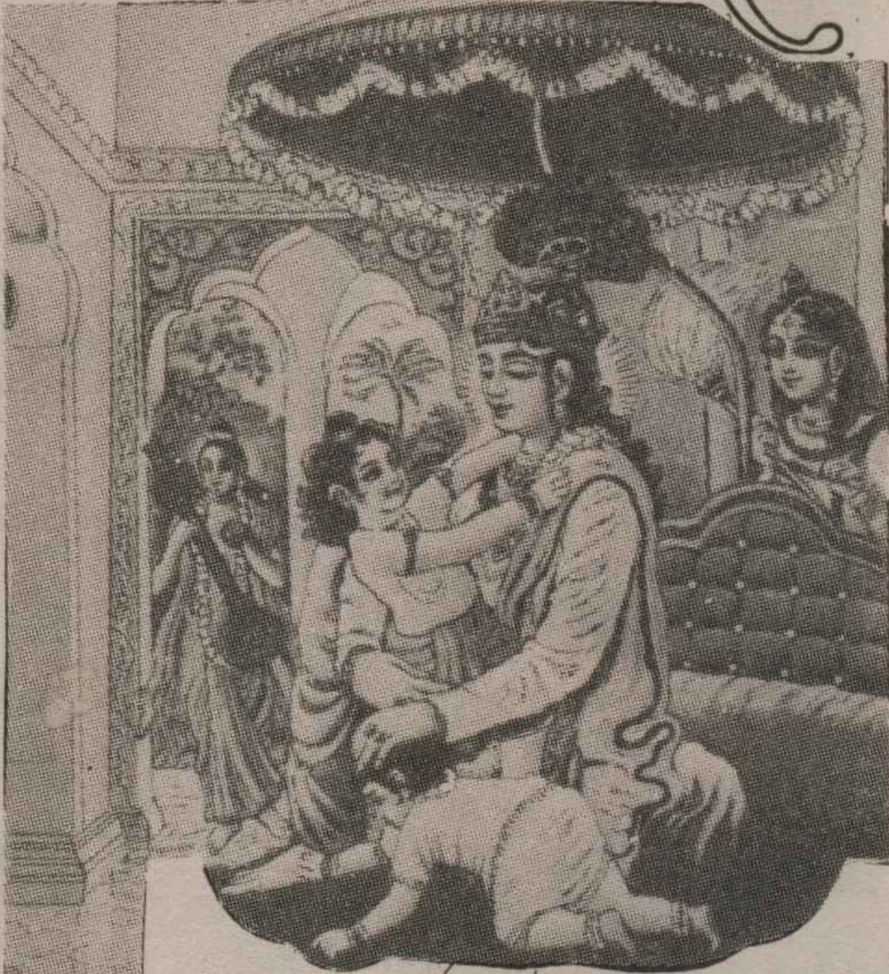
پِتاماتا: کرشن ۔ ماتاپِتا سُے
گورو سُے گیان سُے تہٕ آتما سُے
دِلس شروٗبمُت ۔ اَچھن منٛز جائے تمی سنٛز
مُحبّت سُے خلوٗص پٔنٛز دَیا سُے

पिता माता कृष्ण - माता पिता सुय
गुरू सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय
दिलस श्रोपमुत अंछन मंज़ जाय तंम्य संज़
महोबत सुय खुलूसुच पंज़ दया सुय ॥



कृष्ण पंज़य पांठ्य मख़लूकन पनुन मोल ।
करान छ़िस पोंपुरिन्य गथ, तस वरानलोल ॥

KRISHNA



کرشن پنٕنی پاٹھی مخلوقن پنٕن مول

کران چھس پونٕیرٕ گتھ تم برٕن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پرزلونی دست و پا چھم سریہ کرشنس
دلکی یم نقشہ ہاوم سریہ کرشنس
یمو کاتیاہ حسین پمپوشہ سر کری
یمو ستی تخ سجاوم سریہ کرشنس

۱- دست = اتھ - ۲- پا = کھور ۳- تخ = تخت

प्रज़लवुन्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलुक्य इम नक्शि हांविम श्रीकृष्णस
यिमव 'कांत्याह् ह्सीन पंपोशि सर 'कंर्य
यिमव सूत्य तख सजांविम श्रीकृष्णस




His
Divine
Grace
श्रीकृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं

خوبصورت

● خوبصورت سانہ آنگنی ژاو تے

گوپین دپی تو کرشن سون آو تے

کرشنہ ڈیوٹھم ژھایہ روس زن ماہتاب

شامہ ژھاین سریہ ہیو نون دراو تے

ہیون دل اوس دار روس، دروازہ روس

اَتھی اندر پرژھنے گوژن ٹھہراو تے

نورِ ستی اوند پوکھ گرک گورنم نہال

من پرسن چھم ۔ دل برن چھم چاو تے

ذکرہ بیٹھ تے فکرہ بیٹھ کرنم دیا

ہیانہ غفلژ ہند ہیوتن ماناو تے

کرشنہ! دیتھم تیوت رژی رژی سیر گوس

توتہ دوپھم نیتھنہ روزی گراو تے



खूब सूरत सानि आंग॒'न्य चा़व तय।
गूपियन द'प्य तव कृष्ण सोन आव तय॥

कृष्ण च्छूठुम छा़यि रो'स ज़न माहताब,
श्याम॒ छा़यन सिरिय ज़न नो'न द्राव तय॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़॒' रो'स।
अंथ्य अन्दर अछ़नय को'रुन ठहरा़व तय॥

नूर॒ सात्य ओ'न्द पो'ख गरुक को'रनम निहाल,
मन प्रसन्न छुम दिल बराम छुम चाव तय॥

ज़िकिरि प्यठ तय फिकिरि प्यठ क'रनम दया,
म्यानि गफ़ल'च़ हुन्द ह्यो'तुन मा नाव तय॥

कृष्ण॒ ह्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,
तोति दो'पथम "युथ न॒ रोज्यम ग्राव तय"

یور ژھورم، اور کرشنن گورتس
بس کنی کتھ : کرشنہ گارن پراوتے
کرشنہ سمرن کرتہ چشمو ڈیشہن
یوٗد نہ باور چھے ذرا ازماو تے
بانسری کن کن تھوٗوم منزل سوٗرم
فاصلا ! آنگن مہہ گو صحراو تے

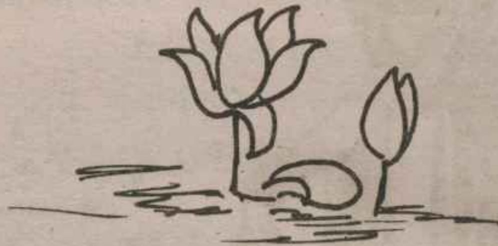
شہکار

ہہہ گو بیدار بخ . از گوم بیدار بخت
وچھم دیدو کرشن تس سرپہ انہار
سہ گوٗرت ووستہ کارن پوٗز صنم ہیو
دتن زگتس پننہ اکھ حسن شہکار

योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस ।
बस कुनी कथ—कृष्ण् गारुन प्राव तय ॥

कृष्ण स्मरन करत् चश्मव ड्योशिहन ।
यॊद न् बावर छुय जरा अज़माव तय ॥

बांसुरी कुन कन थॊवुम मंज़िल सुरुम ।
'फ़ाज़िला'! आंगुन म्य गव संह्राव तय ॥





म्य गव बेदार बरुत अज़ गोम बेदार ।
वुछुम दीदव ; वुछुम तस सिरिय अनहार,
खुदा सांबन कृष्ण गॊर सोंच कॆंछ़ि कॆंछ़ि ।
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार ॥



میرا یہِ بیٹھ کرٛشنہٕ دیا

پرٛیمہٕ ہٕنٛز میرا سو گیہِ نچ کنہٕ ہتال
جلوٕ ہاوِتھ بختہٕ بڈ کرِتھن نہال
بالہٕ کرٛشنا! تس یہِ پرٛژھنے دِتھ ژٕ گوکھ
تِی دِتم چھِپے پننہٕ عظمژ ہنٛد سوال

ژ یہ یامتھ کھولتھم ستھ درشنکی بر
کھورن تل وچھ مہ صحرا، کوہ تہ سنگر
مکانکی تے زمانکی حلقہ ژھوٹی گام
چھُہ نہ کرشنہ گوپالا ژ یاور

चे यामत खूल्यथम सथ दर्शनकि बर।
खोरन तल वुछ म्य सहरा ,कुह त संगर
मकानुक्य तय ज़मानुक्य हलक छोट्य गांम
छुहम ना कृष्ण गोपाला ! म्य यावर ॥

मीरायि प्यठ कृष्ण दया

प्रेम हुच मीरा स्व ज्ञानुच कुन्य मिसाल,
जल्वु' हा'विथ आर'कं'चू क'रथन निहाल ।
वालु कृष्णा तम यि प्रिलनय दिथ चु' गाख
ती दितम म्य पर्नान अज़म'च हुन्द सवाल।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانہٕ پرٛیمُک زٕونگ یمِس لوگ سوٗر گو
سِریہٕ مَن پرٛوُن زٕژن ہُند نوٗر گو
لَن تَرانی پرانہٕ سَمیچ ریت آس
قودرَت سٕتی میرایہٕ اَنگ اَنگ طوٗر گو

चानि प्रेयमुक ज़ोंगं यैमिस - लोंग सूर गव,
सिर्यायि मन प्रोत्रुन ज़्चन हुन्द नूर गव ।
लन तरोंनी प्रानि समयिच रीत ग्रोंम ,
कोर्त्र सृत्य ' मीरायि ' अंग अंग तूर गत्र ॥



میون دِل اوس دارِ روس دَروازٕ روس
اَتھی اندر پرٛژھنے گوٗرُن ٹھہراو تے

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़ु' रो'स।
अ'थ्य अन्दर प्र्ज़्नय को'रुन ठहराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास, दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस ॥ ॐ सत सत ॥

Love at first Sight

خاندر

شبیہہ کرشنن وچھم دھرتی بنیل گو
اچھن تہندس شبیہس ستی میل گو
وجودک ویژ تھوؤم بس آیتن تسی
کرشن پرووم مہ کیت خاندر مژھیل گو

(میرا)

۱۔ شبیہہ = فوٹو
۲۔ دھرتی = زمین
۳۔ ویژ = جائداد
۴۔ مژھیل = شگفتگی
۵۔ آیتن = حاضر
۶۔ پرٕون = حاصل کرن



शबीह कृष्णुन वुछुम धरती बुन्युल गोंव,
अछन तंहदिस शबीहस सृत्य म्युल गव ।
वजूदुक व्युच़ थोंवुम बस आयितन तंस्य,
कृष्ण प्रोवुम म्य क्यत खांदर संद्युल गव ॥

کاگا! سب تن کھائیو۔ چن چن کھائیو ماس۔ دو نینا مت کھائیو۔ پیا ملن کی آس



شُری کرَن پوٗزا پَزُیک اِظہار یٖ
کرٛشنہٕ بَھگتَن شُرلہِ مَنٛز تام کار یٖ
زاؔہدا! ییتھِنےٚ کرٛشِن درشُن دِوان
دِل کرُن موصُم ۔ دِیٖ اُدھار یٖ

शुर्य करन पूज़ा—पज़्युक इज़हार यी,
कृष्ण् भक्तन शुलि मंज़ ताम कार यी।
जांहिदा ! यिथिनय कृष्ण दर्शुन दिवान,
दिल करुण मोसूम दियी मोधार यी ॥



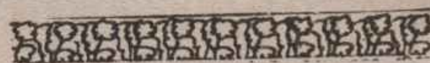
یمِس پُرشس زَنم ہیو وپھروٗ تہٕ پانَس
رٹن کنی کرشنہ وتھ ووتا لامکانس
چھپے پرالب گنز اکرو سنز کل
بنی پمپوشہ سر انگ اتہ پانس

ع انسان — ع باگوان — قسمت — ۵۔ سرٕ چھیل

مساوات تہ وہ ہوگی ہے افضل کہ جیسے ہو شب ایک سلگے دوست ہے لاگ احباب نیک

پرُن گیتا تہٕ کرٛشنُن داس سَپدکھ
سۄرن گیتا تہٕ کرٛشنٕنۍ ماے پراوکھ
کرِی میُل کرٛشنہٕ لالس سیتۍ سمرن
سمرٕ گیتا۔ سمرٕ کرٛشنا مہٕ کڈ تھکھ

परुन गीता त कृष्णुन दास सपदख
[illegible]हन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक
करी म्युल कृष्णलालस सूत्य स्मरण
स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थख



येंमिस पुरुषस ज़नम प्यव फ़ूच़ पानस,
रंटुन कुन्य कृष्ण वथ बोत लामकानस।
छुयय प्रालब्द गनिर श्रक्रूर संज़ कल,
बंनिय पंपोशि सर श्रंग श्रंग चें पानस॥

नोट -

वल=गंड, मुशकिल





भक्त रसखानपर कृपा

رَسہٕ خانَن گوٚرَ نٲکھ کرٕتھَس دیا[1]
لوٚلہٕ والِنۍ کرٕ دَیا کیٚنٛہہ کم چھیا
نابہٕ کارٕ چھُس۔ مگر چوٚن داس چھس
کرتہٕ داسَس پیٹھ تہٕ اَز مہرٕچ لگا

[1] مہربانی

یِمِس پیٹھ کرُشنہٕ مہَراجَن دَیا کرُ
بہٕ آسانی تمِس ناو ساگرِس ترُ
حَیاتی تِہنٕز پیٹھ جیوَن تہٕ حیران
سُہ وانِس زِندٕ رُود پھرٕون عُمر زرُ

य!मस प्यठ कृष्ण महाराजन दया 'कर
ब आसानी तमिस नाव सागरस 'तर
हयाती तिहिंज़ प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांनन ज़िद रूद प्रवन उमर चर

रसखानस टोठयव दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,
लोल्'वाल्यन किच् दया कैंह कम छया ।
नाव्'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,
करत् दासस प्यठति अज़ म्यहर् च निगाह ।।



भक्त बिल्वमंगलपर कृपा

● گُپالَن بِلوٕمَنگل کوٚر یہِ خوشحال
تِمِس اوس کرٛشنہٕ سِمرَن حال تَے قال
اَوَے کرِنوو نَس مٔنزِل سَواگَت
چھُ کوتاہ رُت دیالوٗ کرٛشنہٕ گوپال!

یِمَو لُہرِو پزرُک قصرِ شاہی
تِمَو کُر پانہِ سے آخر تباہی
کرشن مہراج ووتھ اُدھار کورنکھ
چھُ کوتاہ جان بھگون یا اِلٰہی!

यिमव लुहरोव पजरुक कसरि शाही,
तिमव कर पानुसुय आखर तबाही।
कृष्ण महाराज वोथ उधार कौरनख,
छु कोताह जान भगवन या इलाही!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,
तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।
अवय करनाव्यनस मंज़िल स्वागत,
छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल !!



फलवालीपर कृपा

میوہ واجینۍ بختہ بُڈ اکھ نازنین
کرشنہ سمرن اوس تس پوزاتہ دِین
پرتھ ہیوس منز درینٹھ گو تس کرشنہ رنگ
ہوونس تمۍ موکھ پنن۔ کوتاہ حسین

چھُ کرِدارُک تھزَر وِیوٚد کرِشنٕہ بھَگتَس
تٕمِس گیانٕچ تٕپش پانَس اَندَر مَس
چھہ اَوگوٗن تَس نِشے یٕژ دوٗر یٕژ دوٗر
تھوان بھَگوَن پُرُش یُتھ سٕتی پانَس

छु किरदारुक थज़र व्योंद कृष्णु भक्तस,
तंमिस ज्ञानुच्य तंपिश पानस अन्दर मस,
छि अवगुण तस निशे यंच् दूर यंच् दूर,
थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यंन्य भक्त बंड़ अख नाज़नीन,
कृष्णु स्मरण ओस तस पूज़ा तु दीन।
प्रथ मेवस मंज़ द्रांठ्य गव तस कृष्णु रंग,
होंवनस तंम्य मुख पनुन कोता हंसीन ॥



سوُر داسس، کرِشنہٕ! بخشتھ گیان دِھیان
تَشنہٕ ہرِدَن گوشہٕ عرفان باگران ۴
کیاہ گژھی کمہٕ یوٗد مہہٕ تے ساگرَ کرِکھ
لُکھ مہہٕ منٛزٕ یتھٕ آسہٕن تارَس ترَان

کرکھ یود کرشنہ سودا، کن پنن دِل
مگر سودا بنن دون منز چھ مشکل
کری ما اور بھگون بخت بیدار
ملے کر کرشنہ بھگتی بن ژ فاضل

करख यॊद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,
मगर सोदा बनुन दुन मंज़ छु मुशकिल।
क़री मा ओरु भगवन भक्त बेदार,
मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च़ फ़ाज़िल॥

सूरदासस आंनुथ गाश

सूरदासस कृष्ण वननुय ज्ञान ध्यान,
तश्नु हृदयन गो मु इरफ़ान बागरान।
क्याह गछ़ी कम .यॊद' म्यते मागर करख।
नृख म्य मंज़य युथ आस'हन तागस तरान॥



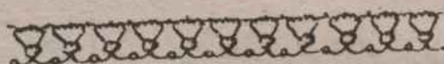
● کرشنہ اچو نے نقشہ پا چھم شوز من
چھس اوے کنی دین و دھرم وتھ سوزن
پی کران لچھ منزلن ہنز وتھ گڈم
چھیکرس چھس پانہ از منزل بنن

کیا خدا ہے؟ اس کا جواب گیتا دیتی ہے - خدا ہے بلکہ "خدا ہی ہے" دوسرے

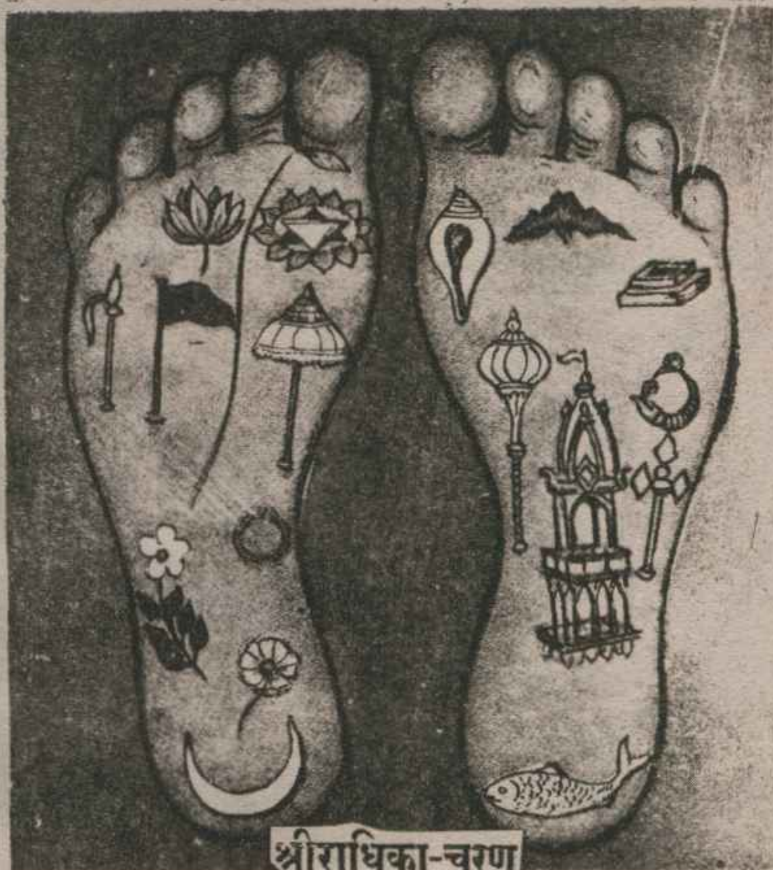
شری کرشنٕنی چرن سادھن کلس پیٹھ
مگر یارس چھلان پننیو اتھو کھور
یہ کرنس منز تمس حاصِل پرسنتا
یہ گو پریمک خلوصک آخری حد

نوٹ :- ۱- یار : سُدآما جیس کُن اِشارٕ ۲- پرسنتا : خوشی ، مسرت ۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,
मगर यारस छलान पनन्यव अथव खुर।
यि करनस मंज़ तमिस हासिल प्रसन्नता,
यि गव प्रेयमुक, खुलूसुक आखरी हद॥



कृष्ण! चोनुय नकश पा छुम शूच मन,
छुस अवय किन्य दीन धर्मुच वथ स्वरन।
यी करान लछ मंज़िलन हुंज वथ कडुम,
छेकरस छुस पानु अज़ मंज़िल बनन॥



श्रीराधिका-चरण

رادھاچھ آمژ کرشنہ وتو ڈالہ اَنِن زان
پرتھ منزلس پیٹھ زانہ ونِن باگہ دتن گیان
محروم پھرشن بانہ دین دیت نہ بخش دل
تم گاشہ تش یژ دور پیمتی اَنی تہ پریشان

پمپوشہِ پاد

ڈالہِ شوٗبیا میون دِل موٗرلی دَرَس
بس یوٚہے پمپوش پھوٚل میانِس سرَس
دِل چھُ دِل : پمپوشہِ پادن ہُنٛد عکس
ڈالٕ گُذرٲوِتھ کھورَن میوٗٹھ کرَس

पंपोशि पाद

डालि शुब्या म्योन दिल मुरलीदरस,
बस योहय पम्पोश फोल म्यानिस सरस।
दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक्स,
डाल्य गुज़राविथ खोरन म्यूठा करस॥

राधा छि आमुच कृष्ण वतव, डाल अंनिन ज़ान
प्रथ मंज़िलस प्यठ ज़ानुवुन्य न बागि दितुन ज़ान
महरूम पुरुषण बानु, दयन द्युतु नु बखशुन दिल,
तिम गाशिनिश येंच दूर प्यंमति अंन्य तु परेशान॥



گیٹشیمس باڵکس نش نرٗون شرَیان
پُری چھا ! حوُرچھا ! اوتارانسان
اُچھن وُزمَل ، ڈِکس ٗنردرم موگھس گہ
یہ وُچھتھے کامہ دیوُس ہوش رَاوان

—— . ——

۱۶- جو باطل ہے موجود ہوتا نہیں ، جو حق ہے نابود ہوتا نہیں

سِری کرِشنا! مَنُک وِیُژ باوَفا دِم
پِتا ماتا چھُہَم پرُتیچھ دَیا دِم
یَمَن ہیانِن گوٗنَن پھِر امرِتُک سَگ
اَمی سَتی زَنمہ پھیُر کاسُم بَقا دِم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बावफा दिम
पिता माता छुह्म प्रमच्य दया दिम
यमन ह्यान्यन गुणन फिर अमृतुक सग
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम बका दिम

ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान
परो छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।
अछन वुजमल, इचकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछथ कामदीवस होश रावान ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।१६। अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।१७।
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ।१८।



سُمی توٚی گوٚہیوٚ شالِمارٕ ہے تٔرو

بالہٕ کرٛشنٔس کٔرو پوشہٕ پُوزای

پوشہٕ پُوزا کٔرِتھ لولہٕ شَبداہ پٔرو ۔ بالہٕ کرٛشنٔس کٔرو پوشہٕ پُوزای

بالہٕ کرٛشنٔس کٔرو پوشہٕ پُوزای

———-———

۱۹ ۔ کبھی نون کرتی نہیں آتما ، کبھی خود بھی مرتی نہیں آتما

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥
न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥

روپ میون اوس من ہمی ستی نار زن
زمہریرکی پاٹھی شیہلوو سوچنن
تن حرارت ۔ من چھ گیانچ زینہ وٗنی
زینہ وٗنی گیانچ دِژم موٗلی دارن

रूप म्योन ओस मनहेमी सृत्य नार ज़न,
ज़म्हरीरुक्य पाठ्य शेहलीव सोंचनन।
तन हरारत- मन छु ज्ञानुच चेनुवन,
चेनुवन ज्ञानुच दिच़ुम मोरलीधरन ॥



(वनुवुन

सम्यतवी गूपियव शालमार हय तरव,
बालकृष्णस करव पोशि पूजा १
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

19/2

گوکلس ساری ہے زتنہٕ زوٗلہٕ کرٛو۔ جایہٕ جایہٕ ہے کرٛو ژندرمس سال

پریمہٕ سٕریہہ بانسری لولہٕ تھاکن برٛو

بالہٕ کرشنس کرٛو پوشہٕ پوزای

اُلفتچ ہورتھٕ ہیتھ شریرس کرٛو۔ لولہٕ والین دپو ہیتھ برٛن ماے

مایہٕ ہوٚت اکھ قدم تل ژرٛوچھ مامرٛو

بالہٕ کرشنس کرٛو پوشہٕ پوزای

مالہٕ لوٗگ پربتس ہیتھ بہن مازرٛو۔ سارِنے دِل تہٕ شِل اَرچھ لوشان

گبوہٕ لج آبہٕ جوی۔ نژرٛنہٕ لگیم سرٛو

بالہٕ کرشنس کرٛو پوشہٕ پوزای

حُسنہٕ آکاشہٕ کنی لعل و گوہر جرٛو۔ تارکن فاضلا شولہٕ برٛاگاش

دِلوین گوژھ وٚنُن پایہٕ از ترٛاو رٛو

بالہٕ کرشنس کرٛو پوشہٕ پوزای

۲۲۔ بدلتا ہے انسان لباس کہن نیا جامہ کرتا ہے پھر زیب تن

गूकुलस सांयंसय ज़ितिनि ज़ूलाह करव,
जायि जायि हय करव चन्दरमस सान।
प्रेयम स्त्रेह बांसुरी लोलु थालन बरव।
वालु कृष्णस करब पोशि पूज़ा ॥

उल्फतुच मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलुवाल्यन दंवि यथ बरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल चु वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

मेलु लोंग परबतस पथ ब्युहुन मा ज़रव,
सारिनय दिल तु शिल अज़ छि तोशन।
ग्यवनि लंज्य आबु ज़ुय नचनि लंग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,
तारुकन 'फाज़िला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गोछ बनुन पानु अज़ त्रावि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥



अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

جے جے !



مَنَس مَنز گرزان بانسُری ہنز ہوٗد رے

یہ لَے بالہِ کرشنا چھ چانِ زبہ جے جے

پنزِ یگ آلوہ گو وَنن مَنز پیاپے

یہ چانی چھ بُڈ مہربانی زبہ جے جے

دوُدک شرہیہ تہٕ امرت چھ کھاسین برانے

چھ اتھ سَلسبیلچ رَوانی زبہ جے جے

ہو کھسن بیٹھ گلاب پانہٕ پریمی زبہ چھُے دے

نہ کنہہ چھُے برابر نہ ثانی زبہ جے جے

دُیٔ کم گرٕ ھتھ پانہٕ مُنزل گرٕ ھان طے

یمے گون گران پاسبانی زبہ جے جے

۳۱۔ مہاراج کیتسو میں اب کیا کہوں، کہ آثار بد ہیں برے ہیں شگون۔

जय जय

मनस मंज़ प्रेज़ान बांसुरी हुंज़ मोंदुर लय,
यि लय बाल् कृष्णा छें चा'नी चें जय जय।

पज़्युक आल्वाह गव वनन मंज़ पयापय,
यि चांनी छें ब'ड मेंहरबांनी चें जय जय॥

दो'दुक स्नेंह त् अमृत छें खास्यन बरान नय,
छें अथ सलसबील् च[1] रवांनी चें जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चें छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी[2] चें जय जय॥

दुयी कम गंछिथ पान् मंज़िल गछ़ान तय,
यिमय गुण[3] करान पासबांनी[4] चें जय जय॥

नोठ : 1. सोरगुक सर 2. चे ह्यु व 3. सिफत
4. र'छ

किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च



رادھایہ وُنی تو شامہ گٹن ژھایہ کرشن جی

دَرشُن چھُ ہاوان پانہٕ کمیو ترایہ کرشن جی

تھُنی نقشہٕ بنی بنی گاشہٕ ہتھس غاز برہمن گو

لولس تہٕ ہردس سِریہ چھُ سرایہ کرشن جی

یتھ جایہ لوکن ہایہ لولہٕ رت شرہیہ تہٕ سمت خوی

صُلحچ چھُ وایان بانسری تتھ جایہ کرشن جی

یتھ کرایہٕ آتش نارہٕ تترز ترلیشہٕ ہتین لوگ

تتھ کرایہٕ گنگا آبہٕ شُہل سایہ کرشن جی

فاضل اچھُ تس تس یاگہٕ تھزرہ لانہٕ سبزرتس

یَس پرزیمہٕ سانے تیر نظر لایہ کرشن جی

۳۴۰ بدر بھی ہیں داد ے بھی استاد بھی پسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی

अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥



राधायि वनिव शाम् गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पान् कम्यू त्रायि कृष्ण जी ॥

थंन्य नक्शि बनिथ गाशि बुथिस गाज़ ब्रमन गव,
लोलस तु हृदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लूकन मायिबोरुत स्नेह तु समुत खोय
सुलहुच छु वायान बांसुरी तंथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ श्रायि प्रातश नार् तच़र त्रेशि हृत्यन लोग,
तथ कायि गंगा अथि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाज़िल" छु बखतस बागि थज़र लानि स्यज़र तस,
यस प्रेमसानुय तीरि नज़र लायि कृष्ण जी ॥

नोट —

त्रायि = नहजि २ गाज़ — पोड़र
३ व्युच — सरमायि

मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥





(دھورلی ہنز لے)

لے

یام شہ دیت کرشنہ اوتان نے

"جے ہری" گور زگتہ سمسارن دے

انزتہ زانتھ یا نہ زانتھ گہ بہگھ[1]

کل شیمی حے تھوِتھ کن تتھ لے

---

[1] لیس کہنہ چیز زِندچھ مثلن حیوانات، نباتا تہ جمادات بیتر۔

۳۷۔ یہ دھرت راشٹر کے جو فرزند ہیں یہ یادھو سب اپنے جگر بند ہیں

کرشنہ مورلی پرتھ زمانس منز وزان

ییم چھ بوزان تِم چھ بارنی ہوی بنان

य یا الٰہی یوت تاثیر چھا شہس ये

तفرقک ول حل چھ اقوامن گژھان ये

कृष्ण् मुरली प्रथ ज़मानस मंज़ वज़ान,
यिम छि बोज़ान तिम छि बार्न्य हिव्य बनान।
या इलाही ! यूत तासीर छा शॅहस !
तफ़रिकुक वल हल छु अकवामन गछान॥

याम शह द्युत कृष्ण् अवतारन नये
"जय हरी" को'र जगत् संसारन दये ।
अज़ ति ज़ानिथ या न् ज़ानिथ गहबेगह[1]
"कुल्लुशयुनहय" थविथ कन तथ लये[3]॥

नोठ। 1 गहबेगह— कुनि कुनि विज़ि
2 'कुल्लुशयुनय'— यि छाइ जिन्दह छु
3 लये— आवाज़

تَلا بانْسُرِی تُل!

گُبِہ لا اپھولَن گُل ۔ ذَرا بانْسَرِی تُل
ژَہ پیارا اِچھ بُلبُل ۔ ذَرا بانسَرِی تُل!

ژَ پریمک تہ لُولک مُجَسَّم مُجَسَّم
فِدا چھی ژَہ کَم کَم ۔ ذَرا بانسَرِی تُل!

نبَس پیٹھ سُلی کوَر تمنّا سِتارَو
قَدَم تھَو قَدَم تھَو ۔ ذَرا بانسَرِی تُل!

ژَہ پَرتَو مِہ ترُووُتھ مگر ژَھا یہ ژَھائے
گُجِس چانِہ مائے ۔ ذَرا بانسَرِی تُل!

۱۔ ذرا = ہَنہ ۲۔ نَب = اَسمان ۳۔ تمنّا = شوق ۴۔ پَرتَو = جلوَ

بہ قبیلہ فنا گر کوئی ہو گیا قدیمی وہ دھرم اس کا سب کھو گیا

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, ज़रा बांसुरी तुल,
चें प्रारान छि बुलबुल, ज़रा बांसुरी तुल।

च़ प्रेयमुक त़ लोलुक मुज्ज़सम मुज्ज़सम,
फ़िदा छी चें कम कम, ज़रा बांसुरी तुल।

नवस प्यठ सुली कोर[1] तमन्ना[2] सितारौ,
कदम थव कदम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

चें परतव[3] म्य त्रोवुथ मगर छ़ायि छ़ाये,
गंज़िस चानि माये, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. कोरवान 2. :— यछ़ा 3.— जलव

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः॥

گٹن مَنز ہُریہ گو، یتو گاشرو وُلی
اُچھن ہیلتو مُلی، ذَرا بانسرِی تُل!

یمَن گوپِیَن مَنز ژَیہ موہ رلی دِتھ شُہ[1]
تمو کوڑ دُیُ لہٗ[2]، ذَرا بانسرِی تُل!

ژ بالگ آو سُتھا، ژیہ شوبھا چھ عظمتھ
ژ زگنج حقیتھ، ذرا بانسرِی تُل!

کُشِش ہِش کُشِش چھے ژیہ اَتھ بالہٕ پانس
ژ مرکز[3] جہانس، ذَرا بانسرِی تُل!

دَماہ سَانہٕ بہتو امیہ تھوو اَز لوِتھ[4] دِل
چھ فاضِل ژیہ ہائِل، ذَرا بانسرِی تُل!

------ ------

۱۔ شہ = پھوکھ ۲۔ لہٗ = لہٗ = لاَ = اِنکار ۳۔ مرکز = اوٗہوٗکھ ۴۔ لوِتھ = لوِتھ دوٗتھ

गटन मंज हुरचर गव यितो गाशरो वल्य,
अ'छन मेलतो म'ल्य, ज़रा बांसुरी तुल।

यिमन गूपियन मंज़ चे़ मो़रली वितुथ शाह,
तिमव को'र दुयो लह[1], ज़रा वांसुरी तुल।

च' वालक अवस्था, चे़ शोबा छय अज़मथ[2]
च़ जगत'च हकीकत, ज़रा बांसुरी तुल।

क'शिश हिश क'शिश छय अथ वाल पानस,
च़ मरकज़ जहानस, ज़रा बांसुरी तुल।

दमाह सानि बेंहतो, में थोवमय लिविथ दिल,
छु 'फ़ाज़िल' चें मायिल, ज़रा बाँसुरी तुल॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

مَنزِلی باتھ

آلِہ ۔ نابَد ۔ زٕہَر ۔ بادَم چھیکیو
لولِہ بُہرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو
دَرشُنک وٲنُس مہہ رُودُم آرزو
لولِہ بُہرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو

ہٕی تہ یمبرزَل تہٕ جافرِ تےَ گلاب
یاسمن، پمپوش، وِرکیمہ، آفتاب
یم دِیَن کرِ یادِ تم گُل لاگیو
لولِہ بُہرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو

گُل آفتاب

دُوسرا ادھیائے

سن جے نے کہا

ا۔ جو ارجن کا دیکھا یہ رنج و ملال، غم و سوز دل میں طبیعت نڈھال



आल्, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो
लोल् बर्यत्यो कृष्ण् लालो ब्रज् वुलो।
दर्शनुक वांसन में रुदुम आरिज़ो,
लोल् बर्यत्यो कृष्ण् लालो ब्रज् वुलो॥

ही तु यम्बरज़ल तु जाफ़र्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकैंम्य आफ़ताब,
यिम दयन कर्य पाद् गुल तिम लागयो,
लोल् बर्यत्यो कृष्ण् लालो ब्रज् वुलो॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

میانہ وٲرٕ ان سینہ کٕن پنجرَن اندرٕ
اَکھ دِلچ کوٗٹھرٕ چھ چھٕٹمٕژ زَن کھنڈرٕ
چانہٕ بایتھ چھُم لوٗتھ تھوٗمژ ہیہ دو
لولہٕ بٕرٕ تیوٕ کرٕشنہ لالو اَز ولو

—— · ——

سَرِیہ ہوکھ ژنٛدرٕم ڈٕلکس تارٕکھ جُبرٕ تھ
ہَرنہٕ چشمن زن ژٕہ چھُے امرِت بُرِتھ
دِل چھُم لیم گاہے ژٕ ہیٛتم روبرو
لولہٕ بٕرٕ تیوٕ کرٕشنہ لالو اَز ولو

—— · ——

چانہٕ وٕیرِے گوٕکلکی مَنزِل ژھنڈِم
وُنی دِرٕم جمنایہ بٕٹھی بٕٹھی پےٚ تھوٗم
دَر اصل چھُم بَس ہیہ چونےٚ جُستجو
لولہٕ بٕرٕ تیوٕ کرٕشنہ لالو اَز ولو

—— · ——

ارجن کا جواب

۲۔ وہ بولا کہ اے فاتح دشمناں مدھو بادر! مجھ سے یہ نہ ہو گا کہاں

॥ ५ ॥ हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्

म्यानि वारान सीनुस्यन पंजरन मन्दर,
अख दिनुच कठरछि फुटमुच जन खण्डर।
चानि बापथ छम लिविथ थंवमच मे-दो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो॥



सिरियि मुख चन्दरम डचकस तारख जेरिथ,
हरणु चशमन जन चे छुय अमृथ बरिथ।
दिल फोल्यम गाहे च़ु बिहतम रोबरो
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो॥



चानि बेरे गूकलक्य मंज़िल छॅड़िम
वंन्य दितिम जमनायि बठ्य २ पय [2] छंविम
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥



سالِہ ہیتو!

کِرشنہٕ گوپالہٕ! دماہ سالہٕ ہیتو — سِریہِ میشالہٕ دماہ سالہٕ ہیتو

ہیانہٕ امارِ اچھ مُشکل بے رُخی — وِفی کووو ژالہٕ دماہ سالہٕ ہیتو

اِنتظاری، بے قراری پرالبس — رٕہ کُمِس کھالہٕ دماہ سالہٕ ہیتو

یاَنسری تُل! اَزن وَسن یَتھ سلسبیل — اُسی بَرو پیالہٕ دماہ سالہٕ ہیتو

فاضِلن تھوو مَن سجاوِتھ یَس ژَیہٕ کیُت
اَزٕ سُلی کالہٕ دماہ سالہٕ ہیتو

طبیعت ہے کمزور دل نرم ہے — یہ اُلجھن ہے اب کیا مرا دھرم ہے

साल् यितो

कृष्ण' गूपाल्'! दमा साल यितो,
सिर्य मीसाल् दमाह साल् यितो।

म्यानि अमार्! छे मुशकिल बेरुखी,
वोन्य कवो चाल्,दमाह साल् यितो।

इन्तिज़ारो, बेकरारो प्रालबस,
राह कमिस खाल्',दमाह साल् यितो।

बांसुरी तुल ज़न वसन हथ सलसंबील,
अंस्य बरव प्याल् ,दमाह साल यितो।

"फ़ाज़िलन" थौव मन सजांविथ बस चे
क्युत
अज़ सुली काल्,दमाह साल यितो।

नोट : 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥८॥



مبہ کُن وچھ

رادھایہ بُرِی پیالہِ ژِ بہ گوپالہِ مبہ کن وچھ!

اَز کالہِ یَزِہم سالہِ دَماہ لالہِ مبہ کُن وچھ!

مورلی دِ کینے مُشہ[1] تہ گلَن پھیر پنُن رَنگ

بُلبُل ژِ بہ کرَن یوسمَن مالہِ مبہ کُن وچھ!

تَن ژھنی تہ بتھسِ جلوِ، اُچھن سیٖحر[2] ڈیکسِ گہ

زَن سریہِ ژِ بہ موصومہ کرِتھ ہالہ[3] مبہ کُن وچھ!

۱- بھوکھ

۲- گاش

۳- دایرِ- حلقہِ

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।



में कुन वुछ

राधायि बरी च्याल' चे गूपाल' में कुन वुछ
अज़ काल यिज़्यम साल' दमाह लाल' में कुन वुछ

मोरली दि कुनुय शह त गुलन फेरि पनुन रंग
बुलबुल चे करन यासमनन माल' में कुन वुछ

तन थन्य त बुथिस जलव', अछन सेहर, उपकास गाह
ज़न सिरियि चे मोसूम करिथ हाल' मे कुन वुछ

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सूत्य)

सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

گوکُل بہٕ نِمنتھ شاہہِ گُٹن ژھایہ وَندے زوٗ

بادَم تہٕ خضر، آلِہ چھکے ہٕشالہِ ہبہ کُن وُچھ!

اَزچانہِ کلے ٹھانہِ وژھے ملرِ بُہرتھ چھَم

دامہٕ ژِ اگر چھکھ تہٕ بہٕ سنبھالہِ ہبہ کُن وُچھ!

دَروازہِ تھاوَے وُتھی تہٕ ژٕرہٕ پرتھ جایہ کرے زوٗل [1]

بوٗ خونہِ جگر ہارہِ، شمع زالہِ ہبہ کُن وُچھ!

یوٗدلاگہِ بُکری دوٗر [2] تہٕ سَمے گَیِلہ مبہ وُچھی وُچھی

کَنہہ وایہ کرُن چھِمنہٕ ژٹتھ نالہِ ہبہ کُن وُچھ!

چھے وِگنہِ گُنڈتھ دِری تہٕ ژٕرہٕ گوپی چھ غزلخوٗن

زَنہہ ہارِنہٕ کھیٚلس منزنہٕ دِرتھ ژھالہِ ہبہ کُن وُچھ!

کَم مایہ چھُ فاضل ژِ سری کرِشنہٕ نظر تُل

آسُن تہٕ آسُن بہٕ ژٕرہٕ پتھ گالہِ ہبہ کُن وُچھ!

۱۔ زوٗل = چراغاں ۲۔ بُکری دوٗر = گُستاخ ۔

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छायि वंदय ज़ुव
बादम तॖ ख'ज़ुर ग्रांल' छकय थालॖ[2] में कुन वुछ

ग्रज़ चानि कले ठामॖ वछ़य मलरि बंरिथ छम
दामाह चॖ ग्रगर चस्त तॖ बं सम्बालॖ में कुन वुछ

दरवाज़ॖ थवय व'थ्य तॖ' चे़ं हर जायि करय ज़्रल
बो खूनि जिगर हारॖ' शमह ज़ालॖ में' कुन वुछ

यौंद लांगि बुक़ुर्य दोंर तॖ समय गेलि में वुछ-वुछ
कांह वायि करुन छुमनॖ रटथ नालॖ में कुन वुछ

छय विगनि गंडिथ देयं तॖ चे़ं गूपी छि गज़ल खां
ज़ांह हरनॖ खेलिस मंज़ नॖ बिचथ छालॖ में कुन वुछ

कम मायि छु "फ़ाज़िल" तॖ श्री कृष्णॖ' नज़र तुल
ग्रासुम तॖ नं ग्रासुन बं चे़ं पथ गालॖ', में कुन वुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

گُلالہٕ!

گُلالا! ذرا بل! گُپالنٛ دِہے چھے
جِگر چھل، جِگر چھل! گُپالنٛ دِہے چھے!

ژہ چھے داغ سینس، ہیہ دُکھ چھم دِلس چھم
یہ مُشکل ژہ کر حل! گُپالنٛ دِہے چھے!

وۄزِج نارِ بُرہیہ ہِش ژہ لاگِتھ قبا چھکھ
شہِج ژادہ وَل! گُپالنٛ دِہے چھے!

ژہ بیہہ مسولن منز، ژہ پادا سُمت کر
گُنہٕ اُلفتچ کَل! گُپالنٛ دِہے چھے!

گُپالا! یمن سینہٕ دٲدی آخ ہرٛو دِکھ
تُلکھ مَل تُلکھ مَل! گُپالنٛ دِہے چھے!

गुलाला !

गुलाला ! ज़रा वल, गुपालॖन्य द्रॣय छय
जिगर छल, जिगर छल, गुपालॖन्य द्रॣय छय ।

चें छुय दाग मीनस म्य दुख छुप, दिलस छुम
यि मुशकिल चॖ कर हल, गुपालॖन्य द्रॣय छय ।

वोजॖज नारॖ ब्रेंह हिश चॖ लांगिथ कबा छुख,
शिहिज चादराह वल, गुपालॖन्य द्रॣय छय ।

चॖ बेंह मसवलन मंज़, चॖ हांसिल समृत कर
गंन्यर उल्फतॖच कल, गुपालॖन्य द्रॖय छय ।

गुपाला ! यिमन सीनॖ द'द्य ग्राख रूदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालॖन्य द्रॖय छय ।





ٹھنٹی ژوٗرِ ہیمیس گوٗرِ کھینیتھ کرِشنہٕ گپالا
تَس کھٔرنہٕ ڈٕیکس دِرٕ تہ دِلس گوٚنہٕ مَلالا

ماتایہٕ ژٕرہ ہوٗصوٗنہٕ وۄنے لفظِ " مَکھَن چۄر "
اُچھ ییتھنہٕ لگِی باہٕلکا ! اُچھکھ حُسنِ کمالا

نوٹ:-
۱۔ ٹھنٹی = مکھن ۲۔ گوٗرِ = گوٗری بای ۳۔ دِرٕ کھینی = ملالہٕ گرٛزھن ۴ چوٗر = ژور
۵۔ اُچھ لگنی = جسم بدلگنی۔ ۶۔ حُسنِ کمال = Beauty Incarnate

۴۹۔ سُن اب عقل کے یوگ کا حال سُن۔ بہت ایسست ہیں جس سے کرموں کے گن

॥ तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥

اَنْدَس پیٹھ تِمَے لُکھ مبہ واصِل گرٗھان

یِمَن ہُنز عِبادَت ـ خلوصُک نِشان

نَہ تھاوَن طمع، دِیے، نَہ ژُکھ، مَن ہمی

بُہ تھاوَے سو کھس منز تِہنٛد جِسم و جان

کرِشن (گیتا ۹/۲۲)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गछ़ान,

यिमन हुज़ इबादत- खलूसुक निशान।

न थावन तमाह, दय, न ज़रख, मनहमी;

बं थावय सोरखस मंज़ तिहुंद जिस्मुजान॥

थन्य चूरि यमिस गोरि स्वयथ कृष्ण गोपाला,

तस खंच न डयकस द्रूह त दिलस गत्र न मलाला।

मातायि च़े मोसूम वोनुय लफ़्ज़ि "मखन चोर",

ग्रछ युथ न लगी बालका! छुख हुसनि कमाला।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।

बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।



تھَنہٕ ژور

● گبو، دود تہٕ گرُس کیاہ ژٕ بہٕ اندلیشہٕ کرتھ چوتھ بھگوانہٕ! یہند بالہٕ پوٗرت شیہجار لگن دوت زوٗ منگتہٕ، جگر منگتہٕ ژٕ رُح منگتہٕ دل وجان ہوٗصوٗ مہٕ لگے کیاہ اسی ژورِ مکھن کھیوتھ!

۱۔ اندلیشہٕ کرتھ = کھوٗژی کھوٗژی ۲۔ رُح = آتما ۳۔ مکھن = تھَنی

۲۸۔ نگاہوں سے پہلے نہاں ہوں وجود یہ پھر بیچ میں کچھ عیاں ہوں وجود۔

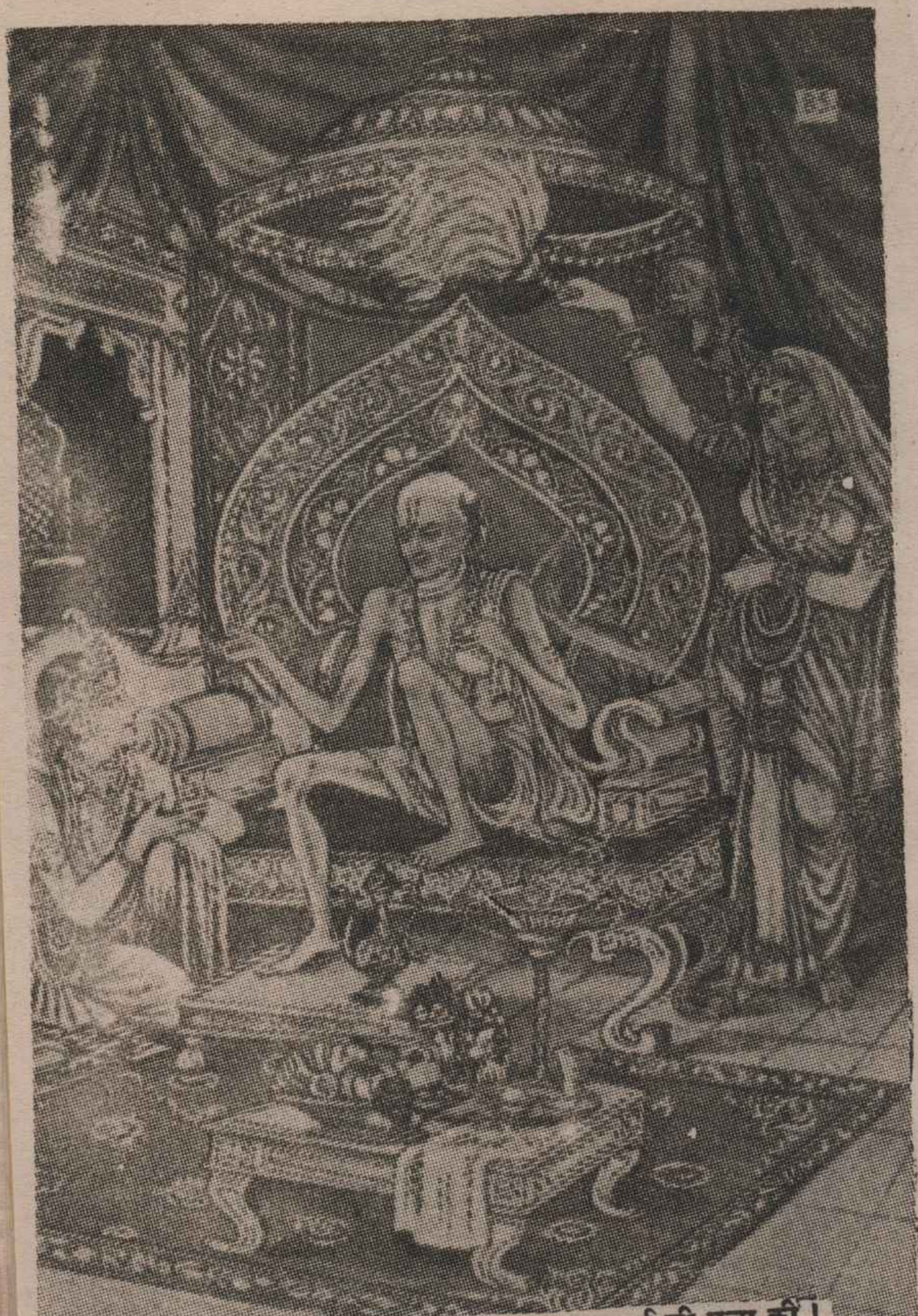
پَرکھ یوّد کرِشنہٕ لیلا گیان لارِ
اَہَنکارُک یوّہَے سیماب مارِ
یہِ حاصِل گوّی تہٕ سَپدَکھ کیمیاگر
یوّہَے گوٚن ساگرَن مَنز تارِ تارِ

परख योंद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;
अहंकारुक योह्य सीमाब मारी।
यि होसिल गोंय त सपदख कीमयागर ,
योह्य गोण सागरन मंज़ तार तारी ॥

ग्यव, दुद, त गुरुस क्याज़ि चें अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् ! युहुंद बागि ओ़रुत शेंहजार लुकन वोत।
जुव मंगत ,जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मोसूम ! लगय क्याज़ि असों चूरि मक्खन स्योथ॥

کرَان پوزا کرشن جی دوستانس
ہشر تس نش — ہشر یارس تہ یارس
سُداما اکھ فقیراہ تے کرشن شاہ
مگر وچھتو یمن دوٕن منز فرق چھا!
وفاداری، دیانت، نیک سیرت
تمامن باگراون پوز محبت
خلوصک شریہہ تہ جذبچ جاذبیت
کرشن جی چھے کران داسن عنایت
اکھ کُن نے ـ مہابھارت بیٹھکن!
اکھ کُن تھنےٕ، قتل، غارت بیٹھکن!
چھ دوشونٕ منز دوان مکتی سہ لوکن
یتھے بخشان ست آگاہی چھ بھگون
بجر گوئی تہ عرفانک تھزر ئی
تھوان قائم یتھی گون چھے کرشن جی

करान पूज़ा कृष्ण जी दोस्तानस,
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस।
सुदामा अख फ़कीराह तय कृष्ण शाह,
मगर वुछतव यिमन द्वन मंज़ फ़रक छा।
वफ़ादारी, दियानत, नेक सीरत,
तमामन बोगरावान पोज़ मुहब्बत।
खुलूसुक श्रेह तु जज़बुच जाज़िबियत,
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत।
अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बियिथ कुन,
अकिथ कुन 'थन्य'—कतुल, गारत, बियथकुन।
छु द्वरवुन्य मंज़ दिवान ओदार लूकन,
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवान।
बजर गव ई तु ईरफ़ानुक थज़र ई।
थवान कांइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी।



भगवान्‌ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की ।



कृष्ण

کرِشن سُداما

کرِشن مہراج اکھ بالک اوستھا
میٹر اوس بالہٕ پانک تس سُداما

یمَن اوس شرِہ لہٕ منز یارانہٕ یارز
کرَان تتھ پیٹھ رشک آس پانہٕ یارز

سُداما عمرِ منز برونہہ کُن پکان گیٔ
کرِشن اَوتار، تس پیٹھ ایشوٗر دیٔے

سُداما اکھ گرِہستی سادھ بلکُل
کرِشن اَوتار : مہاراج ماٰلکِ کُل

کرِشن اوتار گو مشہورِ عالَم!
لوَان آسی درشنَس تس سادھ کم کم!

کرِشن سُداما قصہٕ چھُ پزِ دوستی تہٕ یاداوٗری ہُند اکھ تارٟیخی تہٕ لوشُون اثر نوٗٹ

۳۱۔ تیرا فرض کیا ہے رکھ اس پر نظر نہ جی ڈگمگا اس کی تکمیل کر

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥

सुदामा



कृष्ण महाराज ग्रख बालक ग्रवस्था
मित्र ग्रोस बालु पानुक तस सुदामा।

यिमन ग्रोस शुर्यलि मंज़ यारानु, यारज़,
करान तथ प्यठ रशक ग्रोस पानु यारज़ ॥

सुदामा वुमरि मंज़ ग्रोंह कुन पकान गंय
कृष्ण ग्रवतार तस प्यठ ईश्वर दय।

सुदामा ग्रख ग्रहस्ती साद बिल्कुल,
कृष्ण ग्रवतार महाराज मोलिके कुल।

कृष्ण ग्रवतार गव मशहूरि ग्रालम,
यिवान ग्रोस्य दर्शनस तस साद कमकम।

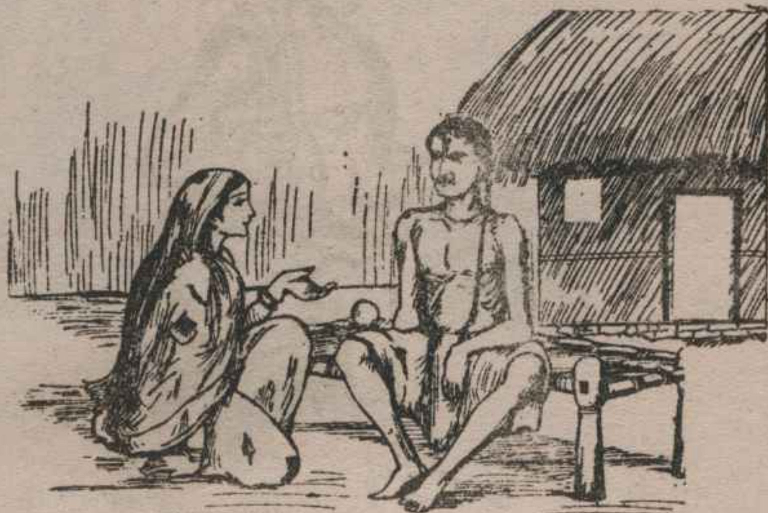
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।

سُدآما وٚتھ مُلاقات گوٚژھ ہیٚبہ پیدٕن!

نصیبس لیکھتھ میانٕس کرشنہٕ درشُن!



تیاری کر سُدآمن زیٹھ سفرچ ۔ تلُن سیتی تحفہ پھٹجہ بیلی تو ملچ

پکان گو تھکھ لڈان گو برونہہ پکان گو ۔ کڈان وتھ اُلفتچ زنہہ ماتھکان گو

کرشن وُچھنک تمنّا تس دِلس پیٹھ

اتھی شوقس اندر ووت مٔنزِلس پیٹھ

اچانک کرشنہٕ لالس گو یہِ گوشن ۔ سُدآما از ییم مَن چھم ہیٚبہ توشن

سُدآما آو دربارس اندر ژاو ۔ کرشن مہراج یوٚرے انہٕ تس دراو

رلوایتھ چھ زِ سُدآمس اوس تحفہ پھٹجہ منز سرٕ، یتھ تتہٕ چہ علاقٲئی زبانہِ منز تنڈُل وَنان چھ۔

सुदामा वोंथ मुलाकात गोंछ् में सपदुन।
नंसीबस लेखत म्योनिस कृष्ण दर्शुन।

तय्यांरी कंर सुदामन ज़ेठि सफरुच,
तुलुन सूत्य तोफ़ फुटजा "बेल्य तोमलुच"।

पकान गव, थक कडान, गव ब्रोंह पकान गव,
कडान वथ उलफतच ज़ांह मा थकान गव।

कृष्ण वुछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ।
तु अछ्य शीकस अन्दर वोत मंज़िलस प्यठ

अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
सुदामा अज़ यियम मन छुम में तोशन।।

सुदामा आव दरबारस अन्दर चाव,
कृष्ण महाराज योरय अननि तस द्राव।



अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्
संभावितस्य चाकीर्तिमरणादतिरिच्यते ॥३४॥ भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः। निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

اونُن باشان و شوکت، پُورِ حشمَت - یہِ چھُسنا بالہِ پانک شرٛہیہ تہٕ اُلوَت

سُدآما کھور کرِشنَن پانہٕ تخٔتس

کرِان سآری رَشک تَس نیک بَختس

بیپآری تخٔتس بِہتھ اَوتار وقتُگ - بیپآری کِنہٕ چھُس سُدآما یارِ وقتُک

اَکِس سیتی اَکھ بِہتھ لول باگراوان - یہِ ڈیشِتھ چھی وُزیرَن ہوش راوان

سُدامَن بیآلی توہِ لیچ ڈآلی کُڈ نئٕ

کُرِن پیش کرِشنہٕ لالس یُس تھٕنی تھٕنی



کرِشنِ لالَس موٚٹھ کِتھ سادٕ ہو آو - کھیوان گوٚ ہہہ کرِان آسس نہٕ ٹھٔہرو

۳۷- مرے گا تو پائے گا جنت میں گھر اگر جیت جائے تو دنیا ہو سر

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥

ओंनुन बा शान् शोकत पूरि हशमत।
यि छुसना बाल् पानुक स्नेह् त उलफ़त।

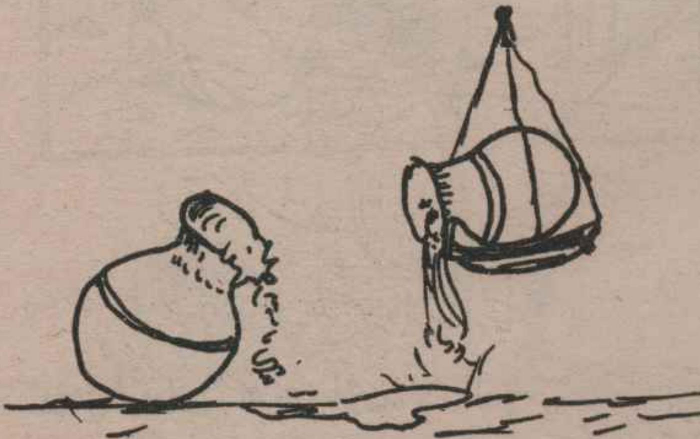
सुदामा खोर कृष्णन पान् तख़्तस,
करान सारी रशक तस नेक बखतस।

यपांयं तख़्तस बिहिथ अवतार बक्तुक
हुपार्यं किन्य छुस सुदामा यार वक्तुक।

अंकिस सूत्य अख बिहिथ लोल बागरावान
यि डोशिथ छी वंज़ीरन होश रावान।

सुदामन ब्योल्य तोमलुच डाल्य केड नेन्य
करन् पेश कृष्ण् लालस युस थंनी थंन्य।

कृष्ण लालस मोठा ख्यत स्वाद ह्युव आव
ख्यवान गव, माह करान ओंसस न् ठहराव।



एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥ सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

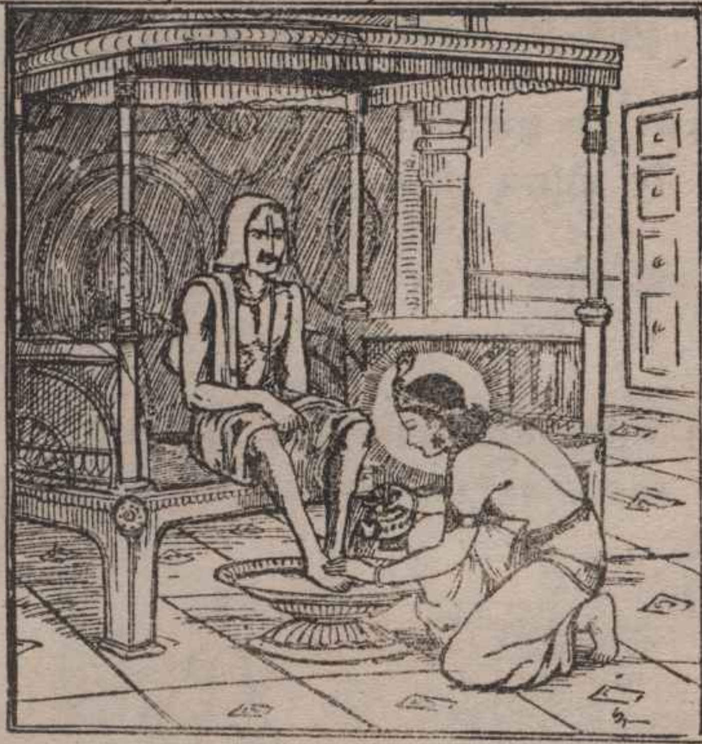
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

کرشن لالَن پرژھس سور حال اَحوال ۔ زمیٖن جایَن زراعت روپیہ تہٕ مال

سُدامانِس لوٚگ بس ڈوکہِ پن چھم ۔ چھ اَتھی نرشتھ گُذران سا تہ کیٚودم

سوخُن زیٹھان کے دفتر برِتھ آئے

اَتیتھ پَتھکُن نہٕ روزان راز سرسائے



سُداما کرشنہٕ لاگس ستی ہمدم

سُداما تَس نہٕ گر بار کہنے غم

سَمے کاٗفی گژھان اَتھ کاروبارَس ۔ ہوان روخستھ چھ آخر یارِ یارَس

ہمت ۔ نہ کوشش ہو اس بیں کوئی رائگاں ، ہو رستے بیں اس کے رکاوٹ کہاں

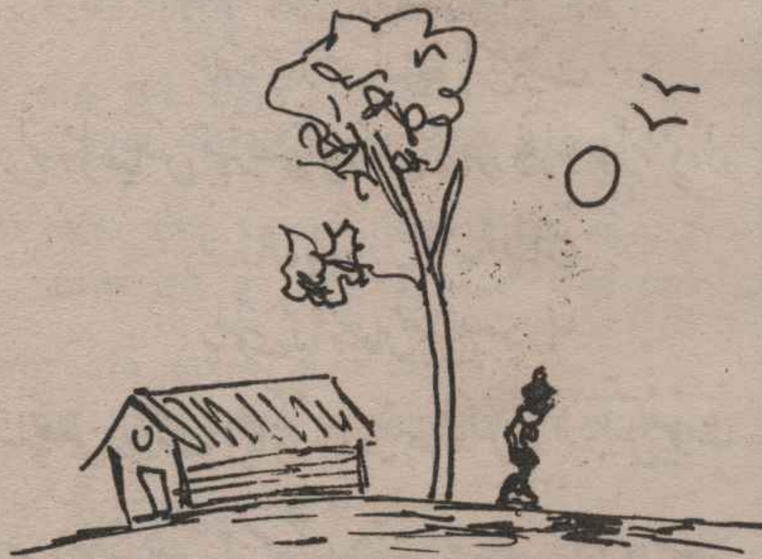
कृष्ण लालन प्रुछुस सोर हाल अहवाल,
जमीन, जायुन, ज़िरात, रोपयि तय माल ।

सुदामा वननि लौग "बसडोकुहन छम,
छि अंध्य मंज़ सथ गुज़ारान साथ तय दम ।

सोखन जे.ठान गंय दफ़तर बंरिथ आय
अत्यथ पथ कुन नु रोज़ान राज सिरसाय ।

सुदामा कृष्णु लालस सूत्य हम दम
सुदामा तस नु गरबारुक कुँहुंय गम ।

समय काफ़ी गछ़ान अथ कारबारस,
ह्यवान रोख़सथ छु ओं'खु'र यार यारस ।



यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।४२।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

کرٲں رۄخصتھ کرشن جی تس فقرس۔ سُدامس ظوٗن زٕ شری آسن ہیہ بیکس

پھران کوٗتہ سُداما کرشنہٕ لاگن۔ سوآری بیٹھ کھُستھ درٲو اَز گرس کن

وزاں بروٚنہہ بروٚنہہ چھ سوٗرنے دف تہٕ دٕم دٕم

وناں ساری ساری سُدامہ راجہ ہو چھُم

ولتھ زرہ بفتہٕ سونہری تاج بر سر۔ سُداما اَز شہن ہندِشہ برابر

گرس کیتھ ووت گامس منز سُداما

خبر کیاہ چھس زٕ گامس منز سپُد کیا

وُچھن گاہکی کرٲں تس پونپرنی گتھ۔ اُمس تعظیمہ سان ماوان گرچ وتھ

ہنہٕ بروٚنہہ کنٕ پکِتھ ڈیشن عمارت

عمارت چھا! سورگ[2] چھا باغ جنت

خبر لج ولی عیالس تم زُستِھ[1] آی۔ دوان زن حور و غلمان سورگہ منزی دراے

سُداماں پانہٕ حارٕن خواب ڈیشان

یہ سورے کیاہ وچھاں چھس چھسنہٕ زاں

بٕ ماچھس رووُمت بیگانہٕ گمُت۔ ییتھ ڈوکس چھُ اَز پیلس[3] بنیوُمت

۱۔ زُستِھ = ہجوٗمہ کرِتھ۔ ۲۔ سورگ = جنت ۳۔ پیلس = شاہی محل۔

करान रोॖसथ कृष्ण जी तस फ़क़ीरस
सुदामस ज़ोॖन जि़ शुयं आसन में बेकस।

फ़िरान कोताह् सुदामा कृष्ण् लालुन
सवांरी प्यठ खंसिथ द्राव अज़् गरस कुन।

वज़ान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ़ त् डुम डुम,
वनान सांरी सुदामा राजि ह्यव छुम।

वेलिथ ज़रबफ़ त' सोॖनहॅर्य ताज बर सर,
सुदामा अज़् शहन हुन्द शाह् बराबर।

गुरिस ~~क्यथ~~ वोत गामस मंज़ सुदामा,
खबर क्याह् छस जि़ गामस मंज सपुद क्याह्

वुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
अमिस तांज़ीमु सान हावान अरुज़ वथ।

हना ब्रोंह कुन पकिथ डीशन अमारथ
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ!

खबर लंज वंल्य अयालस तिम चंसिथ आय,
दवान जन हूर् गिलमान स्वर्ग् मंज़ द्राय।

सुदामा पान् हांगन खाव डेशान,
यि सोॖरुय क्याह् वुछान छुस कैंह् न् जानान।

ब' मा छुस रोवमुत बेगान् गोमुत,
येत्यथ डोकस छु अज़ पैंलस बन्योमुत।

وچھن آشیٛنہِ بہتھ منٛز محلہٕ خانس
کرَان پوٗزا، بڑان لول کرشنس لایس



سُدامہ چھس دپان آخر یہ گمی کوٗرٕ؟ ۔ یہ گمی پرٛشن ہیہ پٔرٛزھنے لول ہیتھ بوٗرٕ؟
وُرٛھس آشیٛنہٕ "امی کرشنن لوٗر لول ۔ وَندلس شری بآژ ہمالین مول تہٕ بوج
عمارت، باغ، مندر، فرش مخمل ۔ تِمی کرٛیٛتھ عنایت لوٗت جل جل
کرشن ییس پیٹھ کرَان چھُے مہربانی ۔ بنان سوٗن ہیر لوٗن انسان فانی

۹۶ ۔ وہ انساں جسے برہم کا گیان ہے ۔ اُسے کرم کانڈوں پہ کب دھیان ہے

वछिन प्राशन्य बिहिथ मंज़ महलु खानस,
करान पूजा बरान लोल कृष्ण लालस ।

सुदासा छुस दपान ग्रोखुर यि कंम्य कोर ?
यि कंम्य पुरशान में प्रछ़नय लोल युथ बोर ।

वंछुस प्राशन्य "ग्रंमो कृष्णन बोरुम लोल,"
वन्दस शुर्य बाच़ माल्युन मोज तय मोल ।

प्रमारथ, बाग, मन्दर फर्शि मखमल,
तंमी कर यिछ़ प्रनायथ यून जलजल ।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,
बनान सुन हेरि बून इन्सानि फ़ांनी ।

اَکھ سُدٲما چھا یٚمِس ہیٚٹھ کرٕ دیا موٗلی دَرَن
اَکھ دِلہٕ چھا یتھنہٕ بسکیں دَرٕ تہندۍ کنوٗل چرَن
یوٗد یڑھکھ پانَس اَندرٕ تھاوَن کرشن پرٲوَن کرشن
شرطِ اوّل اَتھ مقامَس چھُے بَنُن رفٕچ لگن

अख सुदामा छा येमिस प्यठ कंर दया मोरली दरन
अख दिला छा यथ नं बसकीन दर तहंद्य कंवल चरन
येंद यछ़ख पानस अन्दर थावुन कृष्ण, प्रावुन कृष्ण
शर्ते अवल अथ मकामस छुय मन,च, रुहॅचलगन।



کرشن گو دوٚن سمُت گرُھنک سمندر
اوتھ وأتتھ بنان یتھ قطرٕ ساگر

غریبَن، مُفلِسَن ہُنٛد مالَ گوپال
یِمَن کوچھ ژھُر تِمَن ہُنٛد لال گوپال
یِمَن زَنمَس اَندَر پیتُرُن پیوان یِچھ
تِمَن پُرشَن سیٛٹھا رُت فال گوپال

ग़रीबन, मुफ़लिसन हुंद माल गूपाल ,
यिमन को़छ छ़ुर तिमन हुंद लाल गूपाल ।
यिमन ज़नमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यछ,
तिमन पुरुषण स्यठा रुत फ़ाल गूपाल ॥

क़[illegible] गव दुन समुत गछ़नुक समन्दर
ग्रोंतथ वांतिथ बनान हर कतर सागर ।



گلن ہُند سمُت پھانپھلاوان کرشن جی

عجب گلستانہ بناوان کرشن جی

یمن آسہ پترہیچ تہ پنزریچ دلس چھہ

تمن امرتک پیالہ چاوان کرشن جی

کرستانی، پارسی تہ ہندی، سِکھ، مسلمان

نظر کُنی یمن پیٹھ چھ تراوان کرشن جی

دوہ دس شیکرس منز تفاوت پشارہ

ہلشر آدنک چھے زلاوان کرشن جی

عہ فرق

۵۲۔ جو ہو عقل آزاد جنجال سے نکل جائے تو موہ کے جال سے

समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव । स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमन आसि प्रेयमुच त पज़रुच दिलस छिह
तिमन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेंन्द्य सिख मुसलमान
नज़र कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज़ इशारा तफावत
हिशर आदुनुक छुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।

دُئِ ہُند زہر، تفرِقہٕ زٕھینٹ الآیِش

چھ موٗرلی بجاوِتھ مِٹاوان کرشن جی



کتھن منز تھر زہر چھُس تہٕ موٗرلی اثر چھُس

رٕلن یِم نہٕ زٕنہہ تِم رٕلاوان کرشن جی

یہٕ متھرا، یہٕ جمنا، یہٕ گنگا، یہٕ رادھا

سَمے گو مگر تو تہٕ گاران کرشن جی

سِنیہ ہردِ والیو تِمس نِش شوٗزر لوٗب

کھوٗٹِس کیمیا چھے بناوان کرشن جی

بٕرٕن لول گوپی تِمس شوٗزِرِ شانے

تِمَن منز چھ دوٗہ دِین گزاران کرشن جی

شری بھگوان کا ارشاد ؎ سُہ مرکب دوٗہ ییمہٕ ستی کھوٗڈ دھات سون چھ بنان

۵۵۔ تو بھگوان بولے تو ہو مو ذات جو من سے کرے دور سب خواہشات

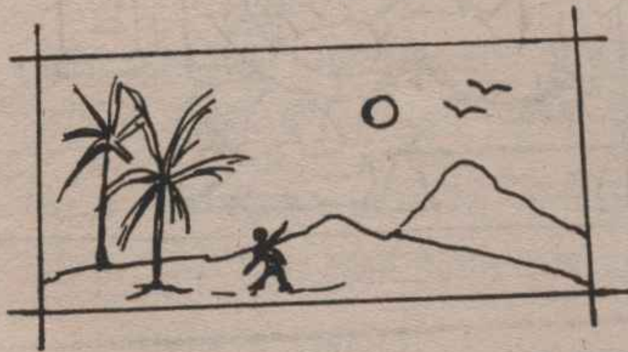
दुई हुंद ज़हर तफ़रुकच छ़ेट अलायिश,
छु मुरली बजांविथ मिटावान कृष्ण जी।

कथन मंज़ असर छुस त मुरली असर छुस
रलन यिम न ज़ाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोज़र लोंब
खोंटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमित श्रोचि शाने,
तिमन मंज़ छु दोह यन गुज़ारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच
प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

یہِمس آسہٕ وَس زاگھِٹر لولہٕ نارَن ؎

بلاشکھ تِمِس پیرزہٕ ناوان کرِشن جیِ

لَچھِس حب وَچھِس مَنز چھُ تَس شولہٕ ناوان

بیابان ذرَس چھُے بَناوان کرِشن جیِ

یمو پونپرِ ژنی گتھ کرُس سِرِیہ پانس

تِمَن چھُے پَننِ جلو ہاوان کرِشن جیِ



مَنِچ راستی نظر لوٗز آنہٕ ہاوان ۔ کرِشن جی سُدابا سُدابا کرِشن جیِ

۵۸۔ ذرا سا بھی دبے کوئی کچھوے کو چھیڑ تو لیتا ہے فوراً سب اعضا سمیٹ

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥

ہولی

اَز چھ سَنسارٕکۍ پُرُش ہولی گِنْدان
فِطرتُک انگ انگ رَنگن مَنز رنگ برٕان
کرِشنہٕ! یکھنا لُکھ چھ آہتۍ وولسنس
سارِنۍ روٗحس اَندر موٗرلی گرٕزان

अज़ छि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फित्रत्तुक अंग अंग रंगन यंज़ रंग थरान
कृष्णु! यिखना लुख छि आम्युत्य वोलसनस,
सारिन्य रूहस अन्दर मोरली ग्रज़ान

यमिस आसि वस ज़ाजिमच् लोलु नारन
बिलाशक तेमिस परज़्नावान कृष्ण जो ।

लछ्स हुब, वञ्स मंज़ छु तस शोल्नावान,
बयाबान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी ।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी ।

मन्'च रांस्ती नज़रि पो'ज़ आंन्'हावान
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी ।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥



تسند سرٕہہ پشن، وڑدٕہن، وحشین نام

ژھیناہ چھا تمن یمٕ چھ پالان کرشن جی

حسد خوٗن ہار، خشمہٕ ہوٗت نار ژاپان

چھ زٕلٕنگ زگت دٕوژتہٕ پیاران کرشن جی

یمن تاپہٕ گرالو چھ ہیژ شورٕ کرمژ

تمن سیٚکہٕ لین بیٚنٹھ چھ باران کرشن جی

چھٕبٕلتھ ژھن یمو کام، کرود، موہ، اہنکار

پوٚبتر تمن جانٕ جانان کرشن جی

۱۔ شہوت ۲۔ ژکھ ۳۔ طمع ۴۔ غوٗرور ۵۔ سرٕہہ : پیار

۶۱۔ حواس اپنے روک اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہو یوگ میں متصل

तसुन्द स्रेह पशन, वुडवुन्यन, वहशियन ताम,
छ्यनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

हसद खूंखार, खशम होंत, नार चापान
छु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेच शोर करमच
तिमन सेंकिल्यन प्यठ छु बारान कृष्ण जी।

छलिथ छुन यिमव काम, क्रुध, मोह अहँकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।

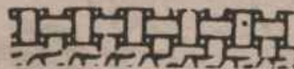


तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥



یمَن کَنہہ نہٕ آسان، یمَن دِل پرٕیشان، تمَن بیکسَن ہُنٛد چھُ سامان کرٛشن جی

یہ ژُھنی ہیو مُجسّم چھُ حُسنک جمالُک
ژُھ فاضل دِلس منٛز بَساوان کرٛشن جی



۶۴۰. جو کرتا ہے محسوس دنیا کی سیر نہ الفت کسی سے ہے جس کو نہ بیر

چھُ برہمن دَھرم ـ گیانٕ ضبط ، رأستی
لبنٕ ـ حق شناسی تہٕ پاکیزگی
تغوفل ترک ـ عیش وعشرت حرام
طمع ، ژکھ نہٕ تھاوٕنی چھلنی مَن ہمی
کرشن (گیتا $\frac{42}{18}$)

छ्‌ ब्राह्मण धर्म—ज्ञान जब-त रांस्ती,
लबु॒न्य हक़ शनांसी तु॒ पाकीज॒गी
तगोफुल तरक श्रांश ब श्रशरत हराम,
तमाह, चख़ न॒ थावु॒न्य छल॒न्य मनहमो
(गीता)

—※—

यिमन कांह नु॒ आसान, यिमन दिल परेशान,
तिमन बेकसन हुंद छ्‌ सामान कृष्ण जो।
यि थंन्य ह्योव मुजस॒म छ्‌ हुस्नुक जमालुक
छ्‌ फ़ाजिल दिलस मंज़ वसावोन कृष्ण जो।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ।६४। प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥



بانسری ہُند ساز گوہیاںبن کَنَن
چُھس اوَے کِنی کرِشنہ شبدَن کَنَ تھوَن
کرِشنہ شبدو بخشُہَم گنگایہ جَل
تَھ تھہم اتھ منز کُورم شوٗد تَن بدَن



نوٹ:۔ ۱۔شبد = لفظ ۲۔ بخشُہَم = دِیُتہم ۳۔ جَل = آب، پونی ۴۔ شوٗد = خالِص

۶۷۔ واس آدمی کے بھٹکتے ہو گرہ ہو اس ہر رہ گردی کا دا۔ پیر اثر



مہربأنی کٔرِے کرِشنَن ۔ سُدامأ! ۔ زٕچھُکھ زگتس اَنٛدَر بوڈ نیک بجنا
بَنان چھا یُتھ دَیالو یار یارَس ۔ چھُ کرٛشنٕنۍ دوستی اَمرِت سَراپا

मिहरबांनी करुय कृष्णन, सुदामा !
च़ छुख ज़गतस अन्दर बोड नेक बस्ता
बनान छा युथ दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

बांमुरी हुन्द साज़ गव म्यानन कनन
छस अबय किन्य कृष्ण शब्दन कन थवन ।
कृष्ण शब्दव बखशुहम गंगायि जल,
वाह कूमिम [illegible] मंज कोरुम [illegible] तन बदन

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥ तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥



بالہٕ پانس لگی تنے از ہیون آے

زۄ وندے ! ہو رلی تلا از کرشنہٕ وا‌ے

چانہٕ حُسنک پرتوہ دیدن کشِش

چون پیکر جذبہٕ : پترِ ہچ رس پیہ گرا‌ے

چانٔ حشمت ، چانٔ عظمت ، چانٔ کتھ ۔ کنہہ نہٕ سمیس منز ٹرِ بہ ہیوٚی سانٔ را‌ے

عظمت = بحر   سمہ = وقت

मोरलोदर

बाल् पानस लंग्यतनय अज म्योन आय,
ज़ुव वन्दय ! मोरलो तला अज कृष्ण वाय ।

चानि हुसनुक परतवा द्रीदन कंशिश
चोन पयकर जज़ब प्रेयमुच सिर्यि काय ॥

सांन्य हशमत, चांन्य अज़मथ, चांन्य छब,
कांह न समयस मंज़ त्रे ह्यव यो सांन्य राय ।



(१) आय---वांसि हुंद त्रख, (२) परतव—जलव,
द्रोद – अछ.

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

چانہٕ موٗرلی ہٕنز درے! اَوتار ژِرے

داس پیاراں چھی ژٕ اَز کاسُکھ اَنیاے

اکھ دٔہہ چشمَن اَندَر کرتَم قرار !

عُمرٕ لوسَم ژٕہی وُچھان کرہیون پاے

پاے = چارٕ

ژٕرے چھُہَم پیر یُمک صَنَم، رُوٗحک ہَرش

ہَرش = سرور

سارنی لول باگراوُن چون داے

داے = مشہور

لوٗت ژوٗر سوندٕر بناؤتھ چوٗن موکھ

حاۓرتن گو پانہ کاریگر خوداے

ساسہٕ بدٔی رنگ بدلوٗنی روٗدم زَنَم

یَس نَرَوَس منز چھُکھ بَستھ سے اکھ ہوٗاے

چانہٕ پرتِمچ چھِہہ مَنَس لَجمژ مہہ چھَم

لولہٕ برتیو! فاضِلَس چھے چاۓ ناے

نا = پریم

شری بھگوان نے فرمایا

ساتویں ادھیاۓ

ایسن ارجن! آماں مجھ پا ئے ہوئے تا مری ذات میں لو لگاۓ ہوئے -

चानि मोरली हुंज़ द्र'य अवतार चुय,
दास प्रारान छी चु अज़ कासुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम कगार,
उमर् लोसम चेंय वुछान कर म्योन पाय ।

चुय छुहम प्रेयमुक सनम, रूहुक हर्ष,
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत चोर सोन्दर बनाविथ चोन मोख,
हारतन गव पानु कारीगर खोदाय ।

मासुवैद्य रंग बदलवुन्य रूदिम ज़न्म,
यस जुवस मंज़ छुख बसिथ मुय अख बेवाय ॥

चानि प्रेयमुच छिह्य मनस लेजमुच मे छम,
लोलु बेत्यों । 'फ़ाज़िलस' छय च्यान्य माय ।

(१) आय---वाँसि हुंद वख, (२) परतव—जलव,
दोद – अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष – सरूर,
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥१॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥२॥
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥



یکدلی ہُند شہ گیوان چھے بانسُری
یَس کنَن گو وَننہ لوٗگ جے جے ہری
مَن پوہتر یَس سپد بس سے چھُ شاہ
کیاہ مُسلمانی کرِ یس کیاہ کافرِ

کُنی یَس نَظَر تَس چھ گیانی وَنان!
تمِس نِش نہٕ چنڈال، برہمن زٕ جان!!
دُیی ہُند سپٹھاہ دُور یحساس تَس!!
سُہ گاو، ہُون تے ہُوس چھُ یکسان وٕندان

(گیتاجی ۱۸/۵)

گیتا ۱۸/۵

कुनी यस नज़र तस छि ज्ञानी वनान
तमिस निश नु चंडाल, ब्राह्मण जु जान।
दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान
(गीता)

यकदिली हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी
यस कनन गव वननि लोग "जयजय हरी"।
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
क्या मुसलमानी करघस क्या का'फ़िरी ॥

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ।३१।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।

गच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥



بالہِ پانَس لاگھےَ جامےَ چھُتی
کرشنہِ لالو! بَس ییتی سَماکھ نتی

پانہِ اَز گنگایہِ ہُند جَل باگراوُ
چاوتہ تگھ اَمرِت ہبہ ہوی ترِیشے ہتی

یم نِشاطس، شالمارس پوس پھُلی
زاری زاری تم لاگھےَ کارے ہتی

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥५॥

وجودک سِر۔ مَنچ روشن سبیل بَن ۲وَتھ
ذَرا ظاہر مَشر۔ اندری دِلَس سَن
کَرُن آوُر پَنُن آسُن نَہ آسُن
دِلچ حرکت بَناوُن کرشنہٕ سمرن

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन
ज़रा ज़ाहिर मशर, अन्दरी दिलस सन।
करुण आवुर पनुन आसुन नं आसुन
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्णु स्मरण ॥



कृष्ण लालो

बालु पानस लागह्य जामत्र छेती,
कृष्णु लालो बस यैती समखक तती।

पानु अज़ गंगायि हुंद जल बांगराव,
चावतख अमृथ म्य हिव्य त्रेशे हेती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,
चांयं चोर्यं तिम लागहय कारे पेती।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।

نورِ آگر سِریہ مو کھ چھے اَنہِ پوٹ
ہیرِ لوبن پانَس پَرون ہندی گہہ وُتھی

خورِ ہندِ پیکرَ تہٕ تھُنی ہیو چھے شریہ
نالہِ ڈہنتھ اَکھ دمہ روزِ تم اُتی

چون آکار چھُم سَتَن برزَن ہہ آتش
یم شعورِ کی بَر دوٚہے تھُوی سے وُتھی

دِل چھ بھرسٹ تے کرودھ از سمیک سُبھاو
بیر اَکھ اُکی سُند تھوان سَمیکِ مُتی

چھی فدِا پادَن گمِتی پمپوشہٕ سَر
کھبل چھ آسَن ہیتھ بہتھ آرے کِتی

اَکھ بُنِو ہورلِی دُرن آدیش لوٚز
فاضلا! سَت دوٚپ چھ داسَن ہندی ٹیٚی

नूर आगुर- मिर्ययिमोख छुम ग्रान् पोंट,
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्द्य गाह वेंथो ॥

हुरि हुन्द पेंकर तु थ'न्य ह्यव छुय शरीर,
नालु रट्हुथ अख दमा रोज़ुम अंती ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन में ग्राश,
यिम शऊरुक्य बर दोहय थव्य मय वेंथी ।

दिल छि ब्रष्ट तय कोध अज़ समयुक सोबाव,
वेंर अख अंवयसुन्द यवान समयिवय मंती ॥

क्रो फ़िदा पादन गोमुत्य दम्पोशि सर,
स्यख छि आसन ह्यथ बिहिथ आरय केंतो ।

"अख बंनिव" मुरलो दरुन आदेश पोंज़,
फ़ाज़िला ! सत दोंप छु दासन हुन्द पंती ॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥ रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥



رادھا وناں چھ ناتھس۔ دوہ دانچھ ہیو ژ یہ پیکر

درشن ہیہ کالی دکھنا! چھم چانہ دوٗرِ رک۔ شر

اچھ ہیانہ لوسہ وانس۔ گنگا یہ بیٹھ ژ یہ پیاران

موُرلی شبد گڑھان چھم۔ گوشن ژ ییتھ بیٹھس تر

اندی اندی ژ یہ رقصہ باپیتھ۔ گمی ہوِر کھیوٗل انتھ تھوو

یم چانہ لولہ پیر تھ۔ رنگین پر تہ زیوٗر

۱۔ دوٗرِ ہر = فراق ۲۔ گوشن = کنن ۳۔ زیوٗر = گہنہ

۱۰۔ سن ارجن میں ہوں بیج ہر ہست کا ہیں وہ بیج ہوں جو نہ ہوگا فنا



राधा वनान छें नाथम—दुद, मांछ ह्यु व चें पैंकर

दर्शुंन में कांल्य दिखना! छुम चांनि दूरिरुक शर।

ग्रंछ म्यानि लोसु वांसन— गंगायि प्यठ चें प्रारान

मुरली शब्द गछ़न छ्रिम गोशन चुं यथ बंठिस तर.

ग्रन्द्य ग्रंन्द्य चे रकम् बापथ कंम्य मोरु स्योंल ग्रंनिथ थोंव

यिमचानि लोलु पूरिथ रंगीन पर तु ज़ेवर॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।१०। बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ।११।

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ।।१२।।

نَے

(نے چھ بہانے .... "مورلی شبداہ اسہ گوکنن ونن چھ رادھا کرشنہ ہے آو۔")

گُس تام وایان! اُلکھ چھ دپان نے چھ وزان نے
گوپالہ تہ یم ویدی چھ دپان
نے چھ بہانے .... نے چھ بہانے

—.—

تصویر آتش خانہ مجازس چھ دوان ڈول
منز نار برہمن طور سنگر
تو دزان نے .... نے چھ بہانے

—.—

نے نغمہ شیرینی۔ ہن چھ برہمان۔ زو چھ زوان کل
یتھ نغمہ برآو معرفتک
سریہ چھ بران نے .... نے چھ بہانے

—.—

۱۳۰۔ کنوں سے ہوئے وصف تینوں عیاں ہوئے جن سے گمراہ اہل جہاں

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।।१४।।

(नय छ बहानय

"मुरली शब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है आव"

कुस ताम वायान!लुख छि दपान नय छि वज़ानय,
गूपाल च़े यिम वेंद्य छि दपान,
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर आतशखा़न् मजाज़स छु दिवान डोल
मंज़ नार् ब्रेंहन तूर् संगर
तोति दज़ान नय—नय छि बहानय

नय नगम् शीरीं़मन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कस
युथ नगम् प्रावुन मायंफतुक
श्रेह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः । माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ।।१५।।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ।।१३।।

تِیتھ گیانؑ حاصِل پید، تھوکھ زانؑی اندر مَن ^1 علم
سوہ زان ناوِتھ اوم ترکُنُے
ھوٗ چھ پرَان نے ---- نَے چھ بہانَے ^2 ایشور

زَن سوزِ وَنس زوٗنگ چھُ لگان، لامُ لگن لام جنگلس
مَن وِہنہٕ لگان تاوِہتین
شولہٕ ژٔٹان نے ---- نَے چھ بہانَے

وَن سوٗر گژِھتھ روزِ ہٹاہ، ژوٗرِ ہیتھ لوٗب
تُھکی پانہٕ تھلان والہٕ توٗے
آسہٕ گران نے ---- نَے چھ بہانَے

فاضِل! شُرُک سازہٕ کُنُے، سوز ہگر ہیوٗن
گوپالہٕ! یوٗہے لولہٕ ہتین
منز چھ سزان نے ---- نَے چھ بہانَے

त्युथ ज्ञान हासिल सपदि यवख जांन्य अन्दर मन
सुय ज़ान हाविथ अोइम तु कुनुय
'हू' छे परान नय—नय छे बहानय।

जन सोजवनस जोंग छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हत्यन
शोलु छटान नय—नय छि बहानय।

बन सूर गछित रोजि हटा चूरि बिहिथ लैब
तेथ्य पानु थलान वालि तवय
अासि गरान नय—नय छि बहानय।

'फाज़िल'! शरीरुक सोज़ कुनुय सोज़ मगर च्योन
गोपालु! योहय लोलु हत्यन
मंज़ छे सज़ान नय—नय छे बहानय।

नोट— ग्यान—जानकारी, अकल
हू—ईश्वर, अल्लाह।



مبہ چھا اِنکار، ماتا ! اِکیاز پُہرٕ ژھتھم

مبہ لے گوہ گاو ماتا ستی ہر دم

دوٚ ہُتھ دوٚد ماسہ چوِتھم ژوٚر ژوٚرے

ہتے پوٚز بوز تےَ ملرے تہ لوٚرے

دوٚہ دِکی ژڈی چیتھ تہ روٚزم کل ہبہ اتھکُن

یوٚہے گوٹھانہ ووٚتھ بھگوانہ سُنٕد دِین

بنیا تہ اَوتار چھینہ اُپرِسکان وُنتھ ۔ تمن ہنزِ ت کتھ ۔ تہ کاہن ہنز چھ شوٚزرٕ آسان ۔



पोंज़ अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याज़ि प्रछ़थम
में लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम।

दोंपुथ दुद मा सां चोथम चूरि चूरे
हतय पोंज़ बोज़तय मलरे तु टूरे।

दुदुक्य नॅटच्य चथ ति रूज़ुम कल म्य मथ कुन
योहय गव ठानु वोंथ भगवानु सुन्द द्युन।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥१९॥
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

پنزر گو سریہ چھا پوشیدہ روزان
کرشن پوز وننہ چھا زنہہ کانسہ کھوژان؟

نہج پنزرچ نہ روزان وانسہ پابند
لوکٹ بالک آمی کورمرت عقلمند



یہ دھرتی گاو ماتا پیٹھ چھ توشان
دوان دود تھنی کرشن آخر بناوان

کھیوان تھنی امرتکی نٹ داہہ چاوان
امس جگ ایشور پدوی چھ دیاوان



पज़र गव सिरियि छा पूशीद् रोज़ान
कृष्ण पोंज़. वनन् छा जांह कांसि खोचान ?

नंहंज पज़र्च न रोजान वांसि पाबंद
लुकुट बालुक प्रेमी कोरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थंन्य, कृष्ण मांखुर बनावान ।

ख्यवान थंन्य अमृतुक्य नंटच दाम् चावान
प्रेमिस ज़ग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

کرشن اکھ بالکا پنزرک مجسّم

فخرِ زگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرشن بُتراتھ پیٹھ صُلح علامتھ

یوہے اکھ پوشِنی امنچ کرامتھ



کرشن گوِیس چھ مورلی منزُ سہ الہام

ییمیک اکھ اکھ صدا لوکن چھ پاغام

کرشن گو ظلمہِ ایوانن سو گگراے

ییمیک دسیلابہ اپزِس تالہِ ترٛکراے

کرشن گو مقصدک نزدیک منزِل

امِس نشِ سارِنے حاصِل کنِے دِل

۲۵۰۔ جو ئیں یوگ مایا سے مستور ہوں، جہاں کی نظر سے بہت دور ہوں

नाभिजानाति मां तु वेद न कश्चन ।।



कृष्ण अख बालुका पज़.रुक मुजस्सम
फ.क़ुर ज.गतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण वुनरांच़ प्यठ सुलहुच करामत,
योहय अख पौशिवन्य अमनुच अलामत ।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज़. सु इलहाम,
यम्युक अख अख सदा लूकन छु पैगाम ।

कृष्ण गव ज़ुलमु अयवानन सु बगराय
यम्युक दंमलाबु अपजि.स तालि तंच़. काय ।

कृष्ण गव मकसदुक नज़दीक मंज़िल
अमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिल।

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ।२५ वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ।।२७।।

کرشن گو دوٚن سمت گرٕھنک سمندر
اوٚتھ وانِتھ بنان پرتھ قطرِ ساگر

کرشن گو یکدِلی ہُند اکھ سُہ آگُر
وِزان ییتھ نِش چھُ یدِھ موٚنتالِ تے سُر

کرشن گیتایہ ہُند گہٕتے مٔنج آش
گٹہٕ تارِیکین منٛز سِریہ پرٛاگاش

کرشن گو اکھ پوترٕ روٗپ پریمُک
تصوٗر دِل پسند سوٚندر شرٛیُک

کرشن گو زلزلہٕ کرودس تہٕ کامس
سُہ خالِص سوٚن کران کم مایہ ترامس

کرشن ہِردِچ چھُ یژ آئینہٕ دٲرِی
اہنکارس بناوان اِنکسارِی

कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर
ओंतथ वातिथ बनान हर कतर सागर।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर
वज़ान यथ निश छु मद्मोंत ताल तय सुर।

कृष्ण गीताथि हुंद गाह तय मनुच आश
गटन तारीकियन मंज़ सिरियि प्रगाश।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक
तस्सव्वुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक।

कृष्ण गव जलज़ला क्रूधस त कामस
पु खालिस सुन करान कम मायि त्रामस।

कृष्ण हृदयिच छु पज़ आईन दोरी
अहंकारस बनावान इन्कसारी।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

کرشن گو تھنز، دوہ دیچ مائے، شہک سریہہ
ہوہس، لوبس کنی برہہ، زالونی ریہہ

کرشن گو پوشون گنگایہ ہند جل
چھلان ہیندس، مسلمانس دلک مل

کرشن گو فکر تارن وانسہ ہند ویٔر
سہ چھا اگسند؟ سہ گو پتھ کانسہ ہند ویٔر

کرشن گو آتما ست آتما بس
تمس سوئے چھ حاصل ڈے یہ گویس

۱۔ مائے = محبت ۲۔ برہہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = بموہے ہیوٗنی
۴۔ طمع ۵۔ ویٔر = جاداد ۶۔ ست = دائمی پزر ۷۔ ڈے = مہربان

اے سخن سنج بھگوان پھر یوں ہوئے۔ کہ سن اے قوی دست پیارے مرے۔

कृष्ण गव थंन्य दुदच मालय शहुल सोंह
मुह्स लूबस कुनी ब्रंह जालवुन्य रेह।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल
छलान हें दिल मुसलमानस विलुक मल।

कृष्ण गव फिर्किर तारुन बांसिहुंद व्युच
सु छा ग्रंक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हुंद व्युच।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस
तमिस सोरुय छु हांसिल दयियि गव यस।

مہاساگر کرشن یم دل بناوان
تمے تس منز گوناگ دردانہ ژھاران
تلاشکی مرتہ گیانکی زیٹھ منزل
شعورس۔ لاشعورس تم بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
तिमय तस मंज़ ग्वनक्य दुरदान् छ़ारान ॥
तलाशिय मर नं ज्ञानक्य ज़ीठ्य मंज़िल।
शऊरक्य ला शऊरक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले.

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥

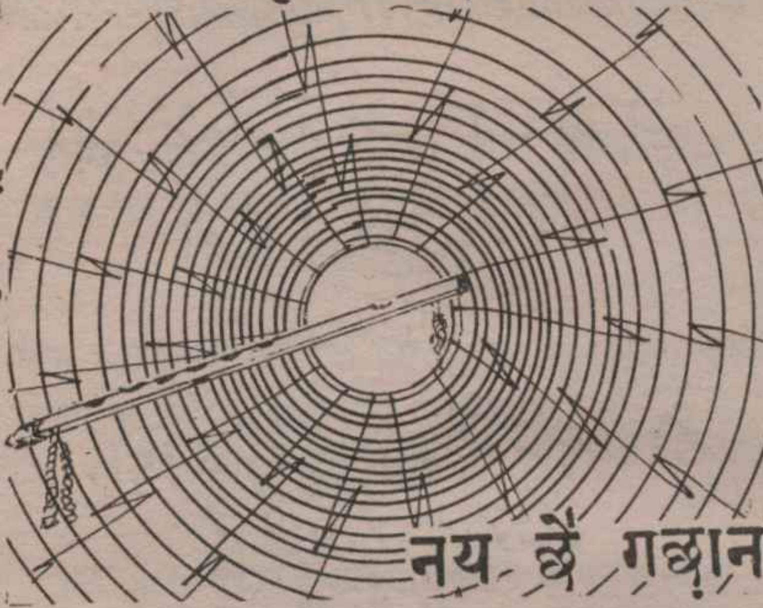


نے ہ مورلی

ہے! نے چھ گرٛزان شولہٕ وہان، نار ہئسہٕ نار
ربہٕ ژینونین کرٛشنہٕ ژبہ کُن
لار ہئسہٕ لار

لاہوتہٕ پیٹھ زٕ ژھ کران کُنہٕ کنگس طور
آکاشہٕ بیٹھک سریہٕ ژبہ نش
جار ہئسہٕ جار

دِل پانہٕ برٛہمان۔ کیاہ چھ دُیٔ۔ کتھ چھ دنان ہیر
یم چانہٕ نیٚج یکی تہٕ سیدی
یار ہئسہٕ یار



नय छैं गव़ान

हे नय छैं गव़ान. शोलु वुहान, नार हसा नार !
रैंह चेनुवुन्यन कृष्ण चेंकुन
लार हसा लार !

लाहूत प्यठ'च जच़ छैं करान कुनिर' कँगस तूर,
आकाशि प्यठुकँ सिरियि च्रे निश
जार हसा जार !

नोटः-
१ लाहूत—तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर।

दिल पानुब्रमान क्या छैं दुई कथ छि वनान वैर
यिम चानि नेहज पेक्य त सपद
यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखंभवोऽभावो भयं चाभयमेव च ।।४।। अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।।५।।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।।

گوپالہٕ ! یَژھکھ آرِ پَلَس آب کرکھ آب

اَکھ پِژہ تہٕ دوٕ دس ہوٗکھرِ لگان

دارِ ہَسہٕ دارِ

ژٕم چانہٕ کلے پھٹیٚ تہٕ چینیکھ وٕنتھ تہٕ یَپدی وٕنتھ[1]

تم قُلزہ مَن تری تارِ ہوٗشکھ

تارِ ہَسہٕ تارِ

دھَن ہارِ نوٗلہ : کینہہ ہگرِ مَن چھُ گنجک نباس

یس ہارِ ژہ یتھ ، تَس نہٕ گنج

ہارِ ہَسہٕ ہارِ

ہارِ تھ تہٕ زِلویٔ نُم ، کرِشنہٕ لوٗ ہُم . مَن مبہ سَرفراز[2]

اَتھ پرِ یمہ پیٚنیچ بیٹھ مبہ گِندم

زارِ ہَسہٕ زارِ

[1] دریاو

[2] پیرہن

गूपाल् यछ्ख आर् पलस आब -करख आब
अख चह त् दोदस होंखरि लगान
दार हसा दार !

यिम चानिकले फट्य त् चेयख व्यथ त् सप्द्य व्यथ,
तिम कुलज़ुमन तेर्य तार् मौंशुख
तार हसा तार !

धन हार् नोला, कें ह न मगर मन छु गंजुक न्यास,
युस हारि च्रें पथ, तस न कुनिच ।
हार हसा हार ।

हारिथ ति ज़्यूनुम कृष्ण लबुम मन में सरफ़राज़
मथ प्रेम् पेंजे, प्यठ में र्युदुम
ज़ार हसा ज़ार ।

नोट — १ सरफराज़—प्रसन्न, खोश ।

لچھ وأنسہ گرِ ھتھ کرِشنہ ژِ مایکھ تہٕ مھکھ دِل

اَتھ زَنمہٕ پھرِس ژٕہیہ چھُ لگان — ژٕہیہ = سات

پیار ہَیسہٕ پیار

—.—

کُملاو ہنہ وُٹھ تہٕ گِہے پھرِتہٕ مہٕ کُن نین ! — نین = اچھ

یوٚد تیرِ نظر دِکھ تہٕ دَپے

مار ہَیسہٕ مار

—.—

کرِشنا ! مہٕ دِتھَم سوز نتَے نے مہٕ دِلس زٕدی

چھس دوٚہَن شہَن بیٹھ پتھ وَنگ نوکھ

دار ہَیسہٕ دار — دار = دِود لر

—.—

موٚرلی چھ نِدا ۔ ہاتفٕنی لَے ۔ شہٕ چھ اُمیک نزُو — = فرشتہ

رُح بالہِ کرِشن ، فاضِلنی یم

شاہ ہَیسہٕ شاہ !

—

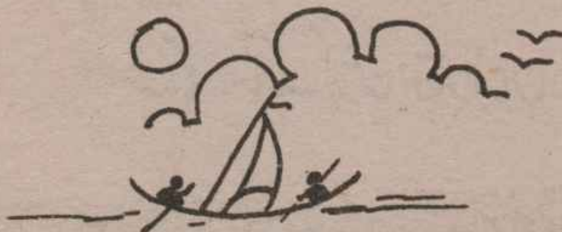
۱۰۔ وہ رہتے ہیں یہ دل مرے ذوق سے وہ کرتے ہیں پوجا مری شوق سے

लछ वांस् गछिथ कृष्ण् च् मा यिख त् मुहकमन
अथ ज़न्म् फिरिस च़्युह छु लगान
प्यार हसा प्यार।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मेंकुन नैन
यौंद तीरि नज़र दिख त् दपय
मार हसा मार।

कृष्णा में द्य् तथम सोज़् नतय नय म्य दिलस ज़्'द्य
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक
होंख दार हसा दार।

मोरली छु निदा, हातफ़्न्य लय, शह छु अम्युक ज़ुव
रुह बाल् कृष्ण् फांज़िल्न्य यिम
शार हसा शार।



परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥१२॥

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥१०॥

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

موٗرلی تہٕ موٗرلی دار

کرشنہٕ موٗرلی پیکرِ سوز و گداز
دِلرُبا، دِلکش، ہوٗدرٕ تےٚ دِلنواز
یے اَمیٖچ عرفاں تہٕ شہٕ قُدسی صِفات
پانہٕ موٗرلی دار چھُ سرتا پا اعجاز

میٖژونے

میٖژونے پٔرانہٕ سَمیٖچ بانسُری زان
بہانہٕ! گوڑھ وچھُن نے کُس چھُ وایان
شریک سوزِ لافانی شُہس تام
شُہک سائک کرشنِ اوتار انسان

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैंकरे सोज़ो गुदाज़,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज़ ।
लय अमिच इरफ़ान त शह कुदसी सिफ़ात
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज़ ॥

नोट :-

१ पैंकर—क़ालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफ़ात—रूहानी गोण थवन बोल
३ मोरलीदर—मरली बोल, कृष्ण जी ।

मेंच्वि नय

मेंच्वि नय प्रानि वकतच बाँसुरी ज़ान
बहानय, गोंछ् वुछुन, नय कुस छु वायान
शरीरुक सोज़ लाफ़ानी शहस ताम
शुहुक मोंलिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोटः-

१. नय—मोरली

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव । न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥



کرشن بانسری ہتھ برتھ سیتھ زن اتھ

یہ مستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چھتھ

یہ سنگیت چھتھ آئے کرشنا

یہ ہو رلی ہو دِر مائے کرشنا

تہ زگتس یہ نے وائے

کرشنا کرشنا!

۱۶- کریں آپ جھ پر مکمل عیاں، جلال مقدس کا واضح نشان

ژٕ شوقہٕ سانٛ رُمَس رُمَس اگر کرٛشن گرکھ
مَرکھ ژٕ مرنہٕ برٛونٛہہ۔ تَوَے نَسہٕ ژٕ زَنٛہہ مَرکھ
چھِ ژٕ نمہٕ پھِرِ لگاں تمن مُشِد گرٛھاں یِمن
تَرکھ ژٕ بوسرَس اگر کرٛشن کرٛشن کرکھ

चॖशोकॖ सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
मरख चॖ मरन ब्रोंह-तवय नसां चॖ ज़ांह मरख
छि जनमॖ फिर्य लगान तिमन मॉशिद गछान यिमन
तरख चॖ भवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बॅरिथ सेहरॖ ज़न अथ
यि मस्ती तॖ फ़रहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !
यि मोरली मोंदॖर माय कृष्णा !

चॖ ज़गतस यि नय वाय, कृष्णा कृष्णा !

केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन । भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥ कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।

یہ لَے زَن مَنَس نار   دَزان زَن ژَنْدَن دار
کرَان زُرح چھ بیدار   یہ یَس لوٗگ سُہ ہُشیار
تُمِس کینْہہ نہ پَرواے کرِشنا!
یہ موٗرلی گرٛشُم کرلے کرِشنا!
مَنَس کینْہہ نہ پَروٲے
کرِشنا کرِشنا

—.—

یہ لَے بوزُنگ ہیٚس   دِوان ایشور یَس
سُہ یوگَس اَندر مَس   کرَان سَتشبجہاتَس
تُمِس نِشس پٔڈر ڈرٲے کرِشنا!
یہ موٗرلی چھ بُڈشاے کرِشنا!
ہیٚسیچ وَتھ چھ سِیُٔزِ تراے
کرِشنا کرِشنا

—.—

۱۹۔ ہوئے سن کے بھگوان یوں لب کشا، ہیں ارجن مرے وصف لا انتہا۔

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तंमिस कौंह न परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कौंह न परवाय, कृष्णा कृष्णा !

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तंमिस निश एचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छै बंड शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ छै स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

یہِ لے پھِر گوشَن تہٕ لۍ لام پوشَن
چھ بُلبُل تہٕ توشَن حقیقت چھ روشَن
یہِ مورلی چھ بے ژھائے کرشنا!
یہِ مورلی چھ یکتائے کرشنا!
یہِ بے رنگ بے ژھاے
کرشنا کرشنا

دَھرم ، کرُہ تہٕ انسان سبھٹائی سبھٹاہ جان
یہِ ساری چھ ہانان چھ منزل سُہ بھگوان
چھ گیتا تہِ ہمراے کرشنا!
یہِ مورلی باتھ یہ پوز آے کرشنا!
سِمے سور ہمراے
کرشنا کرشنا

۲۲- سمجھ مجھ کو ویدوں میں تو وید شام نام دیوتاوں میں واسو ہے نام

यि लय फीर गोशन तु लंज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तोशन हकीकत छे रोशन
यि मोरली छे वे छाय कृष्णा।
यि मोरलो छे यकताय कृष्णा!
यि वे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट: १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन करन वाजन ३ बेरंग—बे इमतियाज



धर्म, ऋय तु इन्सान स्यठा रत्य, स्यठा जान
यि मोरी छि मानान छु मंज़िल सु भगवान
छे गीता ति हमराय कृष्णा !
यि मोरलीं चे पोंज आय कृष्णा!
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा!

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः । इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥

نٔۓ لۓ چھ یکسان کُنی ہِنٛدۍ مُسلمان

چھُ رحمان بھگوان چھُ بھگوان رحمان

دُیٔی ہنز نہٕ کینٛہہ راے کرشنا!

یہ موٗرلی چھ بے نیاے کرشنا!

چھُ یکسان بے نیاے

کرشنا کرشنا

حِفاظَت یٔژن ہنٛز چھَ وَتھ مُرسَلَن ؑ ہنٛز

گیہے موٗسہٕ ہنٛز گیہے عیسہٕ ؑ ہنٛز

گُپالا ژٕ یہٕ تھَز بجاے کرشنا!

یہ موٗرلی دِچ جاے کرشنا!

ژٕ یہٕ نَش یِم سٔمتھ آے

کرشنا کرشنا

۲۵- بحر گو یعنی رسیوں کا سردار ہوں، سخن میں سخن حرف او نکار ہوں

नये लय छे़ यकसान कुनी हेंन्द्य मुसलमान
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान।
दुई हंज् न् कांह राय कृष्णा !
यि मुरली छे बे न्याय कृष्णा।
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा।

नोट:- १ दुई - वैर २ बेन्याय - न्याय रोस



हिफ़ाजत पशन हंज् छे़ वथ मोरसलन हंज्
गहे मूसहन हंज़् गहे ईसहन हंज्
गुपाल। च़े थंज् जाय कृष्णा !
च़े निश संमिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा।

नोट :- पुश -इयवान, २ मारसल—दरजस मंज् पैगमबरस खसिथ

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् । ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

ژُچھکھ تھُنی، ژِچھکھ کھُنی ژِچھکھ مانچھ ہیو تھُنی
یِہ تھُنی سوٚرگہِ کمی اٚنی نقش اَتھ چھ بنی بُنی
چھُ رِکیو پدٚ تہِ سِرساے کرُشنا!
یِہ موٚرلی چھ سِسراے کرُشنا!
عیشِن ژٚ دُبراسے
کرشنا کرِشنا

— - —

کرُشن جی ژٚ چھُے جے گُنے ٹشہٚ، کُنے پے
کُنی نے، کُنی لے یتھی وِہ یِشرھان دے
یِمے گوٚن ژٚ نِشس دِراے کرِشنا
یِہ موٚرلی! ژٚ نِشس زِراے کرِشنا
ژٚ جے جے! ژٚ لوٚگ آسے
کرِشنا کرِشنا

۳۲- قضا ہوں جو کرتی ہے سب کو فنا ، نئی زندگی کی ہوں میں ابتدا



च़ छुख थ़न्य, च़ छुख थ़न्य, च़ छुख मोछ ह्यु व थ़न्य
यि थ़न्य मुरग कम्य अ़न्य, नकुश प्रथ छि ब़न्य ब़न्य,
छु वयूपिड़ ति सिरसाय क्रृष्णा !
यि मूरली छि सुसराय क्रृष्णा !
हसोनन च़ दुबराय, क्रृष्णा क्रृष्णा !

कृष्ण जी च़े छुय जय, कुनुय शह कुनुय पय,
कुनी नय, कुनी लय, यिथी त्रिहच यछ़ान दय।
यिमब गुन च़े निश द्राय कृष्णा !
यि मुरली ! च़ै थ़ज़ जाय कृष्णा !
च़े जय जय, च़े लूँग प्राय कृष्णा कृष्णा !

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्युतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥



گُلَن ہُنٛد تَرنُّم، تھرِن ہُنٛد تَکَلُّم
چھ ہو رلی ہوٚدرُہیوٚ ٹھ گُفتار گُفتار
وَزُن، شَبنمُک، جلترنگ تارِ گُن ہُنٛد
یہ ہو رلی سَراپا چھ سِتار سِتار
دِلَچ پوشوٚنی لَے ہَیچ زِنٛدہ آواز
یمَن منٛز چھ پوٚشیدہ اَسرار اَسرار



गुलन हुंद तरंनुम थरचन हुंद तक्कलुम,
छे मुरली मुदुर म्यूठ गुफ़तार गुफ़तार ।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारकन हुंद,
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलच पोशु वन्य लय मनुच जिन्द आवाज़
यिमन मंज़ छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्रव, दुद, तु गुरुस क्याज़ि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् ! यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत ।
ज़ुव मंगत, जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मीसूम ! लगय क्याज़ि असी ज़ूरि मक्खन ख्योथ ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥



بالہِ کرشنن یام دژنم آگہی

پادِ گوہر دسس ہیہ ذوقِ بندگی

بانسری ہنند شہ چھُ بیڑ بیمک آتما

بانسری ہنزے چھ سازِ دِلبری

بوزِ وِنی دوّپ نے خودی ہنند روپ رنگ

اَتھ خودی پتھ چھے فدا چھ بے خودی

وِچھ امِی موہ لی حقیقتھ واش کوڈ

کوڈ امی ظاہر نہ اوتار گو نبی

یکدِلی منز کرو بیان سورخ دسفید

فاضلا! موہرلی پنُن رنگ قودرتی

———

बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही[1]
पांद्[1] गव हृदयस[2] म्य जौके[3] बंदगी।

बांसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बाँसुरी हुंज लय छे साजे दिलबंरी।

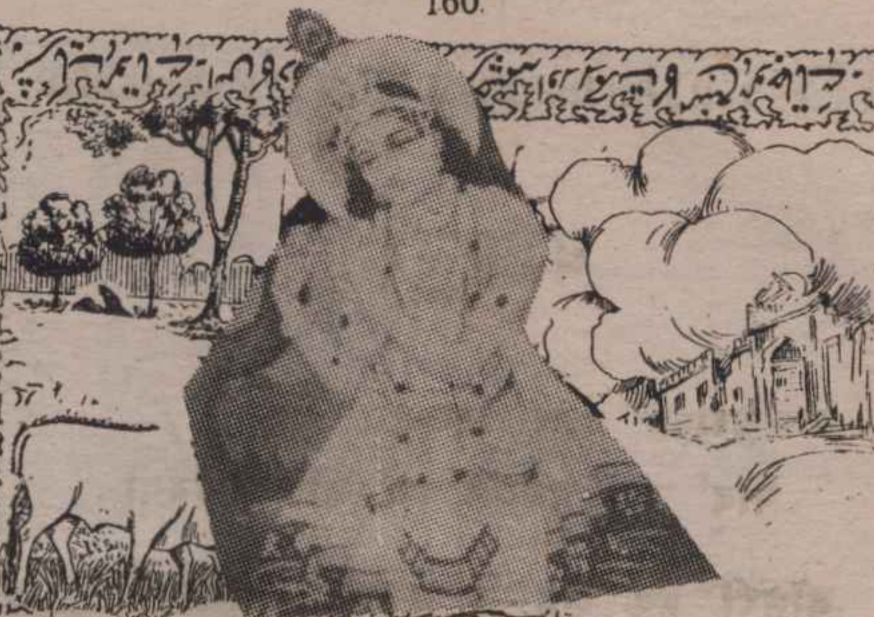
बोजवुन्य दो'प नय "खोंदी" हुंद रूप रंग
अथ खोंदी प्यठ छय फ़िदा लछ "बेखोंदी"

वुछ अमी मोरली हक़ीकंच् वाश कोंड
कोंर अमी जाहिर ज्ञि अवतार गव नबी,

यकदिली[4] मंज कर व्यपान सुरखो सफ़ेद
"फ़ाजिला" मौरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्यंस 2. दिलस, 3. शोक
4. ह्विशर

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥



بے خبر پاٹھی کرشنہ لالن گورنس
مرتبس منز ہیر ہور ہور کھورنس ۔ درجہ
اتھ اندر ہیانین اتھن منز اوس کیاہ
واو ہالین منز بہ سودرس تورنس ۔ ساگرس

شعورس لاشعورس منز کرشن آم
وچھم زن سریہ، لیکن رنگ سیاہ فام
سہ یامتھ درشنگی بروتھی چھ تراوان
وچھان تس گوپین ستی ایشور تام

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لیے ہر طرف ایک ہی پرماتما کا



वेखबर पा'ठ्य क्रुष्णु' लालन गोरनस,
मरतबस मंज़ हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज़ ओस क्याह,
वावु हाल्यन मंज़ बं' सो'दरस तोरनस।

शऊरस लाशऊरस मंज़ क्रुष्ण आम,
वुछुम ज़न सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनुक्य बर वंथ्य छु आवान,
वुछान तस गूपियन स'त्य ईश्वर ताम।

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम॥३॥



دِلَن گوٚ دِینَ وِ دَھرُمک آبروٗ کمَ
چھُ اَوگوٗن پھانٛپھلاوان اِبنِ آدَم
ژٕہٕلکھ اَوتار سَت یوگ پھیرِ وٲلِس
اَوَے کٕنِہ پیادٕ نٕچ کَل آشہِ ہُشٕر چھَم

۱۔ اَوگوٗن = بَدصِفت ۲۔ ابنِ آدم = اِنسان ۳۔ اَوتار ہیوٗن = پیٚیہ زلوٗن۔

विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

صحیح وَتھ رَٹھ ! کرشن چھے ستی پانس
سُہ میلتھ سبزرکِس ذرّس ذرِاتس
جہانس سورِ ستھ یام تار لبنج
نجاتچ رز کرِتھ لاگِس کنارس

संजय उवाच

संही वथ रठ ! कृष्ण छुय सुत्य पानस
सुमीलिथ पज़रकिस ज़रस ज़रातस।
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजातचि रज़ करिथ लायस किनारस।

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरू कम,
छु अवगोन फांफुलावान इन्नि आदम।
चु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहच्छम ॥

अवगोण—बदसिफत,:— काम, क्रोध, लोभ. मोह, अहंकार
याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरूर

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥ एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।



یاہتھ یہِ آدم دین و دھرمک پراٹھ یہ سمسار
گیتاچھ شاہد کرشنہٖ گوپال سپدِ نموٗدار
تس سپدِ بے دینن ادھرمن تے یچھن ستۍ جنگ
ہیٚژ خاک سپدن چھیکرس ظالمہ تہٕ خطاکار

۲۸- ہوا دل کو ارجن کے رنج و ملال، کہا رحم و رقت سے ہو کر بدحال-

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते

گیتا

کرشن جی ارجنس اسرار باوان
تمن ہند آنہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد قند
پرن والس چھ امرت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्ज़नस असरार बावान,
तिमन हुंद् ऑन् गीता गाशरावान ।
श्लोक नाबद त् इलहामी शब्द क़ंद,
परन वॉलिस छि अमृत दाम् चावान ॥



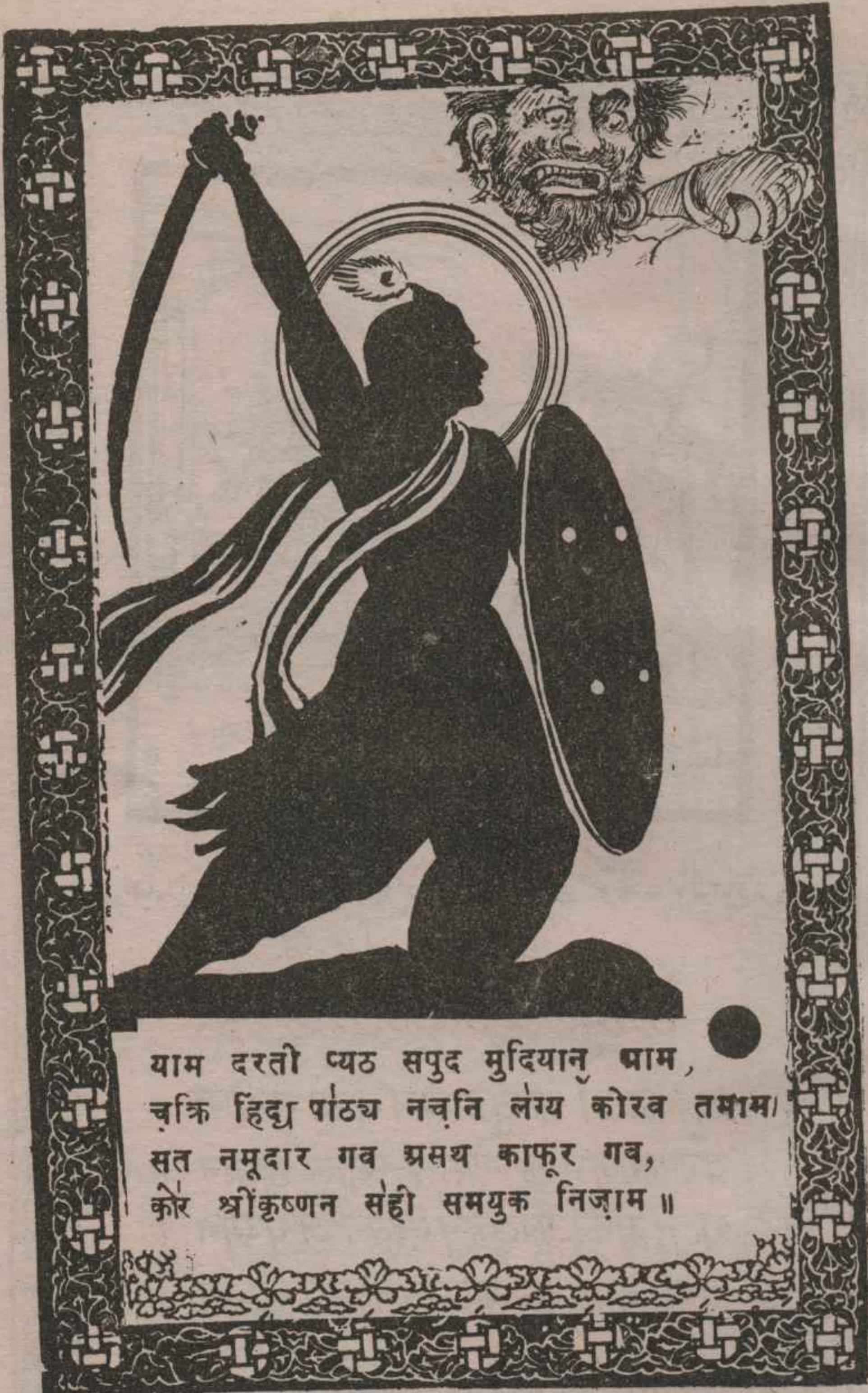
यामत यि आदम धर्मुबदींनुक प्राटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्ण् गुपाल सपदि नमूदार ।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेंच़ खाक सपदन छेकरस बेदीन त् खताकार ।

न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥


یام دھرتی پیٹھ سُیُد ھُدی یانہ عام
ژگرہندی پاٹھی ٹنژنہ یگی کورو تمام
سَت نمودار گو اَسَت کو فنا گو
کورہری کرشنَن صحی سمیک نظام
ہماری ادھر فوج ہے بے شمار، کماں دار بھیشم سا عالی وقار


याम दरती प्यठ सपुद मुदियानॖ श्याम,
च़क्रि हिद्य पॉठ्य नच़नि लॆग्य कोरव तमाम।
सत नमूदार गव असथ काफ़ूर गव,
कोर श्रीकृष्णन सॆही समयुक निज़ाम ॥



چھُ بھگوَن ناسہٕ تراسَن بیخ گالان ۔ دَغابازَن چھُ مۆتُک پیالہٕ چاوان
گٹن منز پھالوان جیوَن اُدھرمَن
سُہ دین دار: حق پرستن تارٕ تاران

छु भगवान नासॖत्रासन बेख़ गालान ।
दग़ाबाज़न छु मोतुक प्यालॖ चावान ॥
घटन मन्ज़ फाटॖवान ज़ीवन अधर्मन ।
सु दीन्दार: हक़परसतन तारॖ तारान ॥



سِتمگارَو سِتَم کوٚر پانَے پانَس
مہابھارت پھِرُن رُوٗد پرٛتھ زَمانَس
تُلِو پزرٕچ عَلَم پوٚز رۄزِ قائِم
سَبَق دِیُت کرٛشنہٕ اَوتارَن جہانَس

सितम गारव सितम कोर पान्य पनस।
महाभारत फ़िरुन रूद प्रथ ज़मानस ॥
तुलिव पज़रुच्य अलम, पो'ज़ रोज़ि क़ाइम
सबख़ द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

اُگرسین اور دیوک دو بھائی تھے۔ اُگرسین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوکی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شورسین کے بیٹے واسدیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تُو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہوگا۔ جب کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غُصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے گھاٹ اتاروں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں مر جائے۔ وقت آنے پر کنس، دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت راشٹر نے کہا:-

اے کروکھیت کی دھرم بھومی پہ جب جمع ہوئے پانڈووں سے مرے لال سب

❋ कृष्ण कहानी ❋

लेखक

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवां पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवां पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूं जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहां से होगा। ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥



کرشن مہاراج کی ماتا جی کو
بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مَر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لِئے تلوار میاں سے نکالی۔ جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کنس نے اُس کا ہاتھ پکڑا اور پرارتھنا کی کہ دیوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور شادی شُدہ ہے۔ اِس لئے آپ اِس کو نہ ماریں۔ اِس کے جو بیٹے ہوں گے ہم اُنہیں آپ کے حوالے کریں گے۔

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार म्यान से निकाली । जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, अबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें। इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे । जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था । उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے ان سے نند جی کے گھر گوکل پہنچانے کے لئے کہا۔ وہاں ان کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسدیو کے ہاتھوں سے ہتھکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پہرہ داروں پر گہری نیند غالب آ گئی۔ واسدیو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचा दो और वहाँ उनके यहाँ कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहां ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियां खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन फैलाकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



واسدیو جی نے کرشن جی مہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط
کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پر پہنچ گیا۔
اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی
پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے
عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان
کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ
لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا
کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقعہ فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر
چوم لیۓ اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسدیو جی کو پار جانے دیا۔
واسدیو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس
وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسدیو جی نے کافی
راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ماتا جسودا جی کے پاس لٹا دیا اور
کنیا کو اُٹھا لیا اور متھرا آ کر دیوکی جی کو دے دی۔ جیل خانے میں پہلے
ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سُن کر تمام پہرے دار جاگ اُٹھے۔ خبر
پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچّے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूप से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग देदिया। वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे। अवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये। खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ہاتھوں میں سے نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیا مار کر مارتا تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کر دیں گے۔ تب کنس نے بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی موت کا شکار ہو گئے۔ جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر نند بھون میں آگئی اور ایک بہت سندر گوپی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا۔ جسودا جی گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو بھگوان کے منہ میں ڈالا۔ تب پربھو نے دودھ کے ساتھ اس کے

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली अरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का ग्रास बन गए ।जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मै सब को खाजाऊँगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बधाई लेकर आई हूं तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुंह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्॥१०॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥१२॥

پرانوں کو بھی پی لیا

اس طرح شکٹاسُر

بکاسُر اور نرکاسُر

وغیرہ بے شمار

راکھشوں کا

خاتمہ کر دیا۔

بھگوان کرشن

پہلے ہی کنس

کو بھی مار سکتے

تھے، لیکن ان

راکھشوں کو بھی



بھگوان کرشن پوتنا کے پران چوس رہے ہیں

مارتا تھا اس لئے کہ کنس انہیں وہاں بھیجتا تھا اور پربھو جی انہیں آسانی اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلا میں بھی سیاست کارفرما تھی، کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن عارہتا بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی شورش

۱۳۔ یکایک اٹھا فوج سے شور و غل ۱۴۔ جو ناقوس چلائے کھڑکے دُہل



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राज-नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन ऋण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥
पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی تھا۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گوپیوں کا
اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی اُن کے گھر نہیں جاتے تھے وہ
رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک
کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ
دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو
ٹیڑھا کر دیا۔ یمل ارجن کا اُدھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارد جی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن
اور اُن کے بڑے بھائی کو دھنش یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے
پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا
اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمنا میں بہا دینگے
اکرور جی نے سب ماجرا نند جی کو سنایا۔ ماتا جسودا نے کرشن سے کہا کہ
آج دور کھیلنے مت جانا، لیکن پربھو نے سب دوستوں کو ساتھ لیکر
جمنا کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی
تو انہوں نے اسے جمنا میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔
وہاں کالیا ناگ کو قابو میں لا کر اُس کے پھن پر ناچنے لگے اور اسی پر

۱۶- مہی پیت یدھشٹر وہ کنتی کا لال وجے پر دکھاتا تھا اپنا کمال

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए। दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था। जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और आने पर माखन खिलाती। भगवान प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे। एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी। यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान ने ऊखल को तिरछा करके यमुलार्जुन का उद्धार किया। जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो। कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इतने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे। अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया। माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना। लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरू कर दिया। जब भगवान के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़ी। वहा कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।

नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।



تین کروڑ کنول کے پھول منگا لیے۔ اکرور جی جب بلرام اور کرشن کو لے جانے لگے تو تمام برج اُن کی جدائی میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی لوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچکر کولیاپیڑ نامی ہاتھی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دوران بے شمار پہلوانوں کو پچھاڑا۔ اپنی ماتا دیوکی جی کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مکتی بخشی۔ واسدیو اور دیوکی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اُگرسین کو قید سے نکال کر تخت شاہی پر بٹھایا۔ جراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب اٹھارہویں (۱۸) بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دوارکا چلے گئے اور رات بھر میں تمام لوگوں کو دوارکا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

संजय उवाच

वहां कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये। अक्रूर जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त ब्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे। मथुरा पहुँच कुवलयापीड़ हाथी का उद्धार किया। मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को धराशायी किया। अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बैठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया। वसुदेव और देवकी को मुक्त किया। कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया। जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया। भगवान ने सबका ही संहार किया। जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुंचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूद पड़े। जरासन्ध ने सोचा इतने

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥
हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

کود پڑے۔ جراسندھ نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں
ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوادی۔ پھر خوش دلی سے بسرِ اوقات
کرنے لگے۔

ادھر بھوماسُر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں
حراست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان
نے بھوماسُر کو قتل کر کے مکتی دلائی۔ پھر ان کے پرارتھنا کرنے پر پتنی روپ
میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈوؤں کی آپس میں دشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے
معتقد تھے۔ کوروؤں نے جوئے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا اور
سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔
لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچتے کھینچتے
ہار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی کبھی
زہر دیا۔ لیکن پربھو سب طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت
کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا
تو اُسے گیتا کا اپدیش دیا۔ جراسن کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

۲۲۔ میں دیکھوں ذرا وہ جوان کون ہیں جری کون ہیں پہلوان کون ہیں

ऊँचे से बचे नहीं होगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी. फिर प्रसन्न मन से रहने लगा। उधर भौमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भौमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया। फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। कौरव और पांडवों की आपस में शत्रुता थी। पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे। कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया। तथा सब कुछ दांव पर लगवा दिया। भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढाया कि स्वयं दु:शासन खींचते-२ हार गया। बन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया। किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने। युद्ध में जब अर्जुन को मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया। जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया। अन्त में

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे। हमेशा धर्म की विजय होती है। पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये। भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन कहां तक किया जाए। यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है।

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

فتح پانڈوؤں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔
فتح ہمیشہ دھرم کی ہُوا کرتی ہے۔ پانڈوؤں کو راج دلا کر
پربھو دوارکا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈٹے تھے وہاں جمے تھے وہیں راجگانِ جہاں۔
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سر بکف
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دادے۔ استاد ذی احترام
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں ہیں غمخوار ہیں
۲۷۔ خسر ہے کوئی کوئی دلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।

श्वशुरान् सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥ कृपया परयाविष्टो

विषीदन्निदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्

ہَرے کرشنا !

کرشنہٕ ہیتو! ہیتو ہیتو! ایسکلین پوشہ زار کر !
بانسرِ شہ دتو دِتو
دُدونن شالمار کر
باغِ نشاط گُل پھولن۔ گوبین دِل تہٕ شل برمن
کرشنہٕ! دہانہٕ از مرز
شبنمس موختہ ہار کر
چانہٕ گیٚشیامہٕ ژھایہ نش صُبح نگین تہٕ شرمہ ییو
سِریہ موکھس نیٚبر گرتھ
حائرتن گرد گار کر
باغِ نسیمہ عطر ژھٹھ۔ آیہ ہوایہ ؤر کران
پوشہ پدین ژہ گتھ کرِ
لوتہ ہمبس امار کر

پیارِ وِنِین یمبرزلن ہچانہِ دیایہ کُن نظر !

کرشُنہ دیالہ یوڈ نہ یکھ

سونتہ بلن بیمار کر

ییمی نہ کر دِلبری گُلن ۔ییس نہ کر دِلبری گُلو !

درشنگی بہر مِثر تمن

پرِیمہ ہتی دِل تیار کر

از تہ گنگایہ بُھجی بہر زھن ۔ چانہِ وُوہ میذ یارِ گرِی

کُل مبہ رُمس رمس گنن

کیاہ یمے رُم مبہ تار کر

تارِ تسکارِ سوول بہ سوول ۔ ہانز کھیلس نہ گُرندِ یون

وُونی اگر لانکہ پیٹھ ترگھ

میون دِل شرمسار کر

چانہِ خیالہ کِنی وُنم ۔ سانہِ بُدی دِل پسند سوخن

فاضِلن تازہ تر غزل

ازِ ینن اشتہار کر

हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
बांसुरी शाह् दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर

बागि निशात गुल फौलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
मेठि, दहान' कर सोखन, शब्रममस म्वख्त'हार कर

चानि ग्येशामि छायि तल. सुबहि निगीन ति शार्मि प्यव
सिर्यि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर

वागि नसीम' ग्र'तरि छठ, ग्रायि बेबायि वर करान
पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति हम्यस ग्रमार कर

प्यारवन्यन य'म्बर ज्वलन, चानि पोत छाई कुन नजर
कृष्णा' दयाल ' यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर

यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव
दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर

ग्रज ति गंगायि ब'ठ्य ब्रछुन चानि' वो'मेजि तारिक'यं
कल मे रुमस रुमस गनन. क्याह् यिमय रुम में तार कर

तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न ग्रंद यिवन
वोन्य ग्रगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर

चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर



کرِشنہٕ اچھو گتھم رنگ تہٕ بے رنگ پان گوم
بے رنگی منز جانِ پیٚم تمُک رنگ سنیوم
پمہ رنگ پیٚم اوِتھ گنے رنگ نظرِ آم
اُتھی رنگس منز سِریہ پیٚم اگاتش دِل بنیوم

Krishn *Leela*

کرشن لیلا

कृष्ण लीला

از:-
ڈاکٹر نظام الدین۔ پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج۔ سرینگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے "بالک اوستھا" اور "کرشن لیلا" نامی کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سورداس، رسکھان، پرمانند، نروتم داس، رتناکر، سبھی ہمیشہ بھارتی کی روایت کو قائم رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دینے ہیں ہم انہیں امیر خسرو، نظیر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیکل اتساہی

اور نظیر بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے ستگورو سری بابا گورونانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سراہنا سکھ قوم نے کی ہے۔

فاضل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیّل کی ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پر خلوص ماحول کے تخلیقی کام میں جٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں بانسری کے میٹھے سُر تخیّلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی اس سُر کو سنتا ہے "جے جے ہری" پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اس میں ہندو مسلمان کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کرشن جی کو گنگا کا ایسا پاون جل (پوتر پانی) تصوّر کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے میل کو دھو ڈالتا ہے ؎ کرشن گو پوتر ون گنگا یہ ہند جل

چھلان ہیند بن مسلمانن دِلک مَل

فاضل صاحب کرشن کی بانسری پر موہت ہیں، کیونکہ اس کا سُر پریم آتما ہے۔ جلوۂ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے

مرلی دھر کرشن اس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے
ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے، جس سے اطرافِ عالم میں
کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور
اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کیے جاتے ہیں۔ اور رحمان و
بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاحب کرشن کے رنگ و روپ پر موہت ہیں
انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں میں رنگ و بو کرشن کی
بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین
گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاحب کی یہ کتاب "کرشن لیلا" بھارتیہ کرشن کاویہ
میں ایک گرانقدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد
رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

نظام الدین

(DR. NIZAM-UD-DIN)
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

ترجمہ: پرتھوی ناتھ کول "سائل" کشمیری۔

دکھشنایَن ہونے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پکھش کے
کالے پندرہ واڑے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں
موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں
مُتبرّک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے 'کرشن' نے جنم لیا۔
گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں 'کرشن' کے معنی 'کالے' کے ہیں
جس کی مناسبت کرشن پکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ
ہے۔ یہ وہ سمے تھا جب جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں
ناسمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا... اندھکار کے اس
دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنما کے وجود کی اشد ضرورت تھی
جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کرتوت والے
منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتاجی
کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا
بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود
جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مُرلی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہمارے

کرشن کے مُرلی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مُرلی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔ کرشن جی سیکیولرازم کے اوّلین پرچارک تھے۔ اُنہوں نے لوگوں کو بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زہریلے سانپوں اور



رہزنوں کو بھی قابو کر لیا اور اُن کا سُدھار کیا۔



کرشن جی دھرم کے محافظ، سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔ انہوں نے انسان کو دُنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور حق پرست تھے۔ وہ پانڈوؤں کے دوست اور پُشت پناہ تھے۔ اُنہوں نے ظُلم و تشدّد، جلعسازی اور دغابازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے اُکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے انہیں "کشمیر کا رسکھان" کا خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی کے سُندر مُرقعے سجائے ہیں۔ اُن کی کتاب "کرشن لیلا" کی لیلاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ اُن کے اس عظیم کام سے سوشل ازم اور قومی یکتا کے میدان میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دُعا ہے کہ یشودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا گلے میں زرق برق جواہرات کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو ابدی مُسرت عطا کرے!

30-8-83

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کاز کو بڑھاوا دینے کے سلسلہ میں فاضل کاشمیری نے "شری جپ جی صاحب اور سلوک مہلہ نواں اور سنتھ رنگ" کے بعد اس بار اپنی کرشن لیلائیوں کا یہ حسین گلدستہ" بالک اوستھا" عوام کے بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے، جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت میں دور رس نتایج بر آمد ہونگے۔

سرینگر کشمیر
۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

علی محمد لنکر

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلاؤں سے سب کو یکساں طور پر اپنی طرف کشش کی ہے۔ ان کا بالک سروپ سورداس اور رس خان جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ ان دو شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق واتسلیہ رس یعنی شفقتِ مادری کا جذبہ) سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کاشمیری ایک ایسی شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں ان تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُریلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں۔ وہ
پرم ہنس رام کرشن مہاراج کے سرو دھرم سمنوئے (Harmony of religions)
کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصوّر کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی،
مقدّس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی
پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں
سناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے
ایک پُرکیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،
روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجّہ
ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی
سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک اوستھا کی کتابت و تزئین
اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصّہ ہے۔

25-1-1984

چمن لال سپرو
25.1.84

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

श्रीभगवानुवाच अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥ ... भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥ ... संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of Divine oneness where limitation of caste and creed are not recognized.

6-11-83. Lakshman joo
Guptaganga

(شیوآچاریہ سوامی لکشمن جو مہاراج - گپت گنگا سرینگر)

शैवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च । दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں، جس کے آئینہ میں اُن کی "انوارِ محمدی"، "شری جپ جی صاحب" اور "کرشن لیلاً" جیسی گرانقدر تصانیف پیش کی جا سکتی ہیں۔

زیرِ نظر اُن کی تصنیف "کرشن لیلاً" اُن کی کرشن بھگتی کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج پر سُندر نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سُنکر اور پڑھ کر سامعین اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں، خالصہ درباروں اور دھا التسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کلام سُنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور اُن کی قدر دانی کرتے ہیں۔

فاضل صاحب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

(دستخط)

۲۶ فروری سنہ ۱۹۸۲ء

(میلارام بنجون ... گوجرہ باغ)

कृष्ण–लीला

Krishna Leela

Thes Beautiful Book

of the Personality of

Kṛishṇa

provides the key to how humanity can become united in peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.

Krishna Leela

This Beautiful Book
of the Personality of

Krishna

provides the key to how humanity can become united in
peace prosperity and friendship around a common cause

By

Alhaj Fazil Kashmiri
R/- Gulshan Nagar, Chanpora, Srinagar
KASHMIR-190015